"अध्यात्म ज्ञान रूपी तोब का गोला

कबीर और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान। जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

अर्थात् जैसा कि वेदों में प्रमाण है कि परमात्मा पथ्वी पर प्रकट होकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान स्वयं अपने मुख से बोली वाणी में बताता है जो सूक्ष्मवेद यानि तत्वज्ञान कहा जाता है। कबीर जुलाहा पूर्ण परमात्मा है। उन्होंने जो आध्यात्मिक ज्ञान अपनी कबीर वाणी में बोलकर बताया है, वह सूक्ष्मवेद यानि तत्वज्ञान है। यह सम्पूर्ण सत्य अध्यात्म ज्ञान है। इसके सामने अन्य ज्ञान जैसे चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद), अठारह पुराणों, ग्यारह उपनिषदों, गीता, कुरान, बाईबल (तौरेत, जबूर, इंजिल) का ज्ञान अधूरा व छोटा पड़ जाता है। जिससे भ्रम निवारण नहीं होता। परंतु कबीर जी का ज्ञान तोब यंत्र के गोले के समान है जो अज्ञान रूपी दुर्ग को ढ़हाकर मैदान बना देता है यानि तत्वज्ञान समझने के पश्चात् कोई शंका साधक श्रद्धालु भक्त को नहीं रहती। संत रामपाल दास जी ने इसी कबीर अध्यात्म ज्ञान के गोले से सर्व धर्मगुरूओं व प्रचारकों के अध्यात्म ज्ञान को अधूरा यानि छोटा सिद्ध करके यथार्थ ज्ञान बताया है तथा खोज की है कि जो काशी शहर में कबीर जुलाहा रहा करता, वह पूर्ण प्रभु है, सर्व का रचनहार तथा पालनकर्ता है। आगे पढ़ें संक्षिप्त वर्णन :-

संत रामपाल जी द्वारा किया गया आध्यात्मिक आविष्कार = जुलाहा कबीर पूर्ण प्रभु है
(Spiritual Discovery = Kabir the weaver is complete God)

श्री कष्ण उर्फ श्री विष्णु जी सतगुण केवल तीन लोक (स्वर्ग, पथ्वी तथा पाताल लोक) में एक सतोगुण विभाग के प्रभु हैं। एक ब्रह्मण्ड में चौदह लोक हैं। ब्रह्म लोक भी इनसे अन्य है। ऐसे-ऐसे असंख्यों ब्रह्मण्ड हैं।

★ परमेश्वर कबीर जी ऐसे-ऐसे असंख्यों ब्रह्मण्डों के प्रभु हैं। सब आत्माओं तथा सब ब्रह्मण्डों के उत्पत्तिकर्ता, सबके धारण-पोषणकर्ता कुल के मालिक यानि वासुदेव हैं। गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में जो सर्वगतम् ब्रह्म कहा है, वह कबीर जी के विषय में कहा है। जैसा कि गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता यानि लोक वेद के आधार से श्री कष्ण ने ''तत् ब्रह्म'' का वर्णन किया है। अर्जुन ने गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में प्रश्न किया है कि ''तत् ब्रह्म'' क्या है। गीता बोलने वाले ने इसका उत्तर अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10 तथा 20-22 में तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 तथा 16-17 में दिया है।

★ अध्याय 8 श्लोक 3 में कहा है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है। अध्याय 8 श्लोक 5 व 7 में कहा है कि मेरी भक्ति कर, मुझे प्राप्त होगा। ★ गीता अध्याय 8 श्लोक 8, 9, 10 में कहा है कि जो उस परम अक्षर ब्रह्म जो मेरे से अन्य है, उस परम दिव्य पुरूष की भक्ति करता है। वह उसी को प्राप्त होता है। ★ श्लोक 20-22 में भी इसी को वास्तव में अविनाशी बताया है जो सब प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। वह अनन्य भक्ति से प्राप्त होने योग्य है।

★ गीता बोलने वाले ने गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में अपने को अव्यक्त कहा है। इसी को गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में क्षर पुरूष कहा है तथा गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में जो अव्यक्त कहा है। इस को गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में अक्षर पुरूष कहा है तो इन दोनों क्षर पुरूष और अक्षर पुरूष तथा इनके अन्तर्गत सर्व प्राणियों व इनके लोकों को नाश्वान कहा है। अध्याय 8 श्लोक 20-22 में जो अव्यक्त कहा है, यह अन्य अव्यक्त है यानि गीता अध्याय 8 श्लोक 3 वाला परम अक्षर ब्रह्म इन से अन्य

है, इनसे परे है। वह सर्व के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। वह कबीर परमेश्वर है। यह वास्तव में अविनाशी है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है :- (उत्तम पुरूषः) श्रेष्ठ प्रभु यानि पुरूषोत्तम तो अध्याय 15 के श्लोक 16 में कहे क्षर पुरूष अर्थात् गीता ज्ञान देने वाला तथा अक्षर पुरूष अर्थात् अध्याय 8 श्लोक 18-19 वाला से (तू) तो (अन्यः) अन्य यानि दूसरा ही है। जो (परमात्मा) परमात्मा (इति) इस प्रकार (उदाहृतः) कहा गया है। (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण-पोषण करता है। वह ही (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) परम प्रभु है।

निष्कर्ष :- गीता ज्ञान देने वाले ने स्पष्ट कर दिया है कि वास्तव में सबका धारण-पोषण करने वाला व अविनाशी परम पुरूष तो मेरे से अन्य है। वही पुरूषोत्तम है। गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में अपने विषय में कहा है कि मैं अपने क्षेत्र (क्षर पुरूष के 21 ब्रह्मण्डों) के सर्व जीवों से उत्तम हूँ। इसलिए मैं लोकवेद यानि सुने-सुनाऐ ज्ञान के आधार से पुरूषोत्तम (उत्तम पुरूष) प्रसिद्ध हूँ।

गीता ज्ञान देने वाला पौराणिकों के श्री कष्ण उर्फ विष्णु जी ने अपनी स्थिति स्पष्ट की है :-

गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में कहा है कि ''हे अर्जुन! तेरे और मेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं। अध्याय 2 श्लोक 12 में कहा है कि मैं, तू तथा ये सब राजा लोग पहले भी जन्में थे, वर्तमान में भी जन्में हैं तथा ऐसा नहीं है कि हम सब आगे नहीं जन्मेंगें यानि अपना जन्म-मरण बना रहेगा। अध्याय 10 श्लोक 2 में स्पष्ट किया है कि मेरी उत्पति हुई है, परंतु मेरी उत्पति को ऋषिजन तथा देवता नहीं जानते ।

गीता ज्ञान देने वाले ने अपने से अन्य अविनाशी तीनों लोकों का धारण-पोषण करने वाला परम अक्षर ब्रह्म तो ऊपर बता दिया है। वही वास्तव में अविनाशी तथा पुरूषोत्तम है। सर्व का मालिक है।

गीता ज्ञान दाता ने अध्याय 18 श्लोक 62 तथा 66 में उसी की शरण में जाने को कहा है। उसी की कपा से परम शान्ति की प्राप्ति तथा सनातन परम धाम की प्राप्ति बताई है। उसी का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 में कहा है कि संसार रूप पीपल के वक्ष की मूल (Root) ऊपर को है जो परम अक्षर ब्रह्म है। तीनों गुण (रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सतगुण श्री विष्णु जी तथा तमगुण श्री शिव शंकर जी) तो संसार रूपी वक्ष की शाखा हैं। जो संत संसार वक्ष के सर्व भागों को भिन्न बताता है। (सः वेद वित्) वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है यानि तत्वदर्शी संत है। इस तत्वदर्शी के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में कहा है कि उस परम अक्षर ब्रह्म की जानकारी तत्वज्ञान में यानि (ब्रह्मणः मुखे) उस सच्चिदानन्द घन ब्रह्म ने अपने मुख से बोली वाणी में विस्तार से बताई है। उस ज्ञान को तत्वदर्शी संतों से प्राप्त कर। कबीर परमेश्वर जी पथ्वी पर सशरीर प्रकट होकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान अपनी कबीर वाणी (वेदों में कविर्गिरभिः) द्वारा उच्चारण करके बताता है। कहा है :-

कबीर अक्षर पुरूष एक पेड़ है, क्षर पुरूष वाकी डार। तीनों देवा शाखा हैं पात रूप संसार।।
कबीर हम ही अलख अल्लाह है मूल रूप संसार। अनन्त कोटि ब्रह्मण्डों का मैं ही सिरजनहार।।

अर्थात् कबीर परमेश्वर ने गीता अध्याय 15 को इन उपरोक्त दोनों दोहों में बता दिया है। कहा है कि संसार रूप एक वक्ष है। इसकी मूल (Root) तो मैं हूँ यानि परम अक्षर पुरूष है तथा तना अक्षर पुरूष है। उस तने से अनेकों मोटी डार निकलती हैं। उनमें से एक डार क्षर पुरूष है, उस मोटी डार को लगी तीन शाखाओं को रजगुण ब्रह्मा,सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव जानों। उस शाखा को लगे पत्ते संसार के प्राणी जानो, देखें संसार वक्ष का चित्रः-

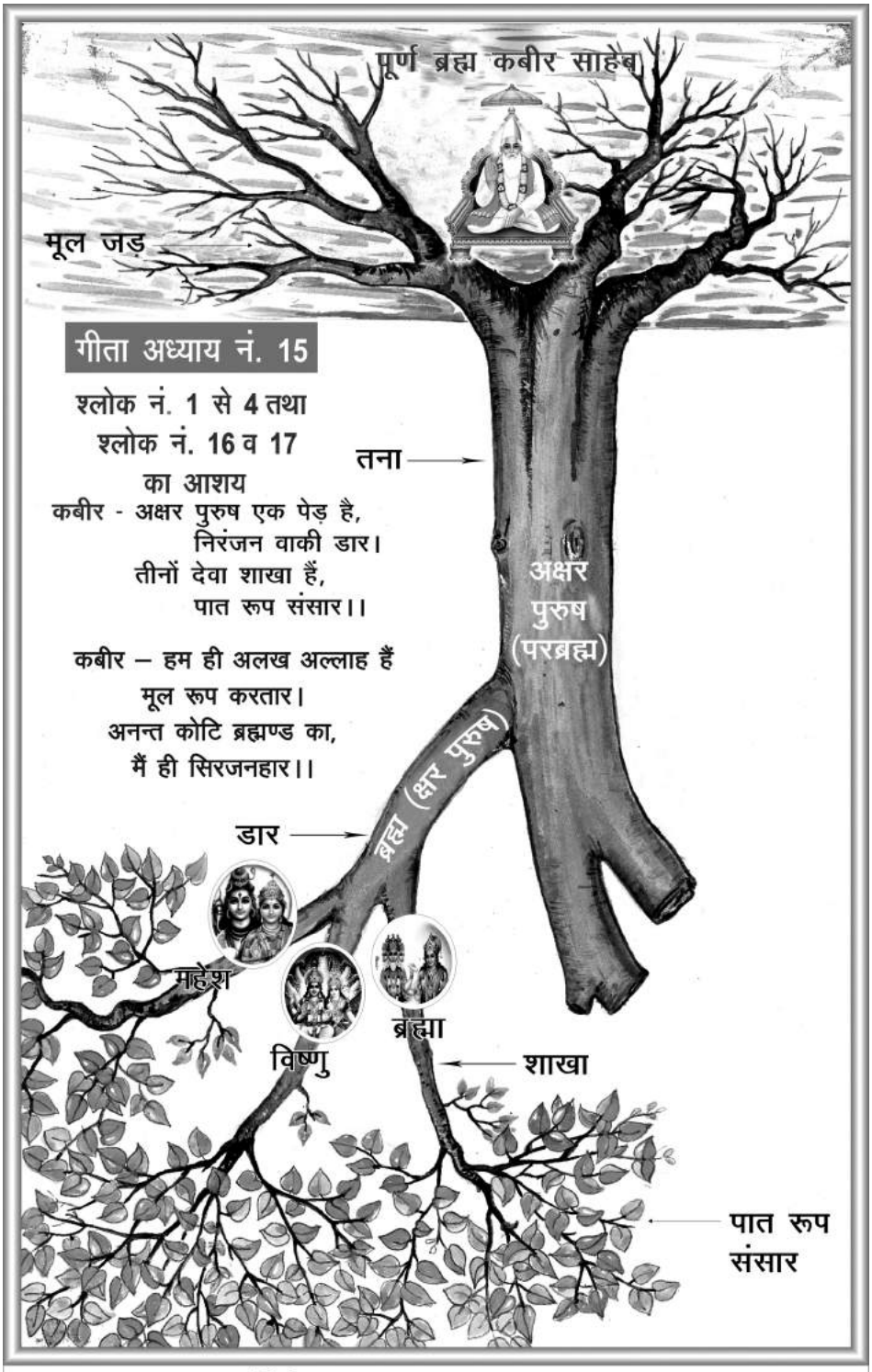

ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में स्पष्ट है कि सबका धारण- पोषण करने वाला अविनाशी परमात्मा तो श्लोक 16 में कहे क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य है। वही सबका धारण-पोषण करता है। वही परम पुरूष यानि पुरूषोत्तम है जो परमात्मा कहा जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि पूर्ण परमात्मा तो गीता ज्ञान दाता यानि पौराणिकों के अनुसार श्री कष्ण उर्फ श्री विष्णु जी से अन्य है।

कबीर परमेश्वर जी ने अपनी स्थिति इस प्रकार बताई है :-

कबीर, अवधू अविगत से चल आया, मेरा भेद मरम ना पाया।
ना मेरा जन्म ना गर्भ बसेरा बालक बन दिखलाया। काशी शहर जल कमल पर डेरा तहाँ जुलाहे ने पाया।।
मात–पिता मेरे कछु नाहीं, ना मेरे घर दासी। जुलाहे का सुत आन कहाया, जगत करे मेरी हाँसी।।
पांच तत्व का धड़ नहीं मेरे जानूँ ज्ञान अपारा।सत स्वरूपी नाम साहेब का वो ही नाम हमारा।।
अधर द्वीप गगन गुफा में तहां निज वस्तु हमारा। तेरा ज्योति स्वरूपी अलख निरंजन धरता ध्यान हमारा।।
हाड़ चाम लहू ना मेरे कोई जाने सतनाम उपासी। तारण तरण अभय पद दाता मैं हूँ कबीर अविनाशी।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने अपनी जानकारी स्वयं ही बताई है। एक समय गोरखनाथ जी जो अलख निरंजन का नारा लगाते थे, शिव तमगुण के उपासक थे, ने कबीर साहेब जी से ज्ञान चर्चा की। उस में हार गये। फिर सिद्धियों का जाल फैलाया। उसमें भी कबीर जी से हार गये। तब श्री गोरखनाथ जी ने प्रश्न किया कि मेरे सामने आज तक कोई भी टिकने वाला नहीं था। आप कहाँ से आ गए हैं। श्री गोरखनाथ जी के प्रश्न का उत्तर शब्द में दिया है। कहा है कि हे अवधूत! (गोरखनाथ जी एक लंगोट पड़दे पर कटी वस्त्र रूप में बाँधते थे। ऐसी वेशभूषा वाले को संत भाषा में अवधूत कहते थे। कबीर जी ने प्यार से अवधू कहकर संबोधित किया है।) मैं अविगत स्थान यानि जिसका भेद मेरे अतिरिक्त किसी को नहीं है, उस स्थान की गति (स्थिति) को कोई नहीं जानता, मैं जानता हूँ। वहाँ से सशरीर चलकर आया हूँ। काशी नगरी में एक सरोवर में कमल के फूल पर बालक रूप धारण करके विराजमान हुआ था। वहाँ से नीरू जुलाहा उठा लाया। इस कारण से मैं जुलाहे का पुत्र कहा जाने लगा। उच्च वर्ण के लोग जुलाहा कहकर मेरा मजाक उड़ाते हैं। मेरे ज्ञान को तवज्जो नहीं देते। मेरा जन्म नहीं हुआ है। मैं किसी माता के गर्भ में नहीं रहा। मेरा कोई माता-पिता तथा (दासी) पत्नी नहीं है। मेरा शरीर पाँच तत्व का नहीं है। यह एक नूरी तत्व का है। परमेश्वर कबीर जी विदेही हैं यानि सबसे भिन्न अलौकिक शरीरयुक्त हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि अधर यानि ऊपर आकाश में एक भंवर गुफा है। वह मेरे लोक में जाने का मार्ग है। वहाँ पर एक विशेष ध्वनि हो रही है। हे गोरखनाथ! आपका अलख निरंजन यानि क्षर ब्रह्म भी मेरी पूजा करता है।

{प्रमाण :- गीता ज्ञान देने वाले क्षर ब्रह्म ने अध्याय 18 श्लोक 64 में कहा है कि वह परमेश्वर जिसकी शरण में जाने को अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है, मेरा ईष्ट देव है यानि मैं भी उसी का भक्त हूँ।}

जैसे वेदों में कविर्देव, कुरान में अल्लाह कबीर आदि यथार्थ नाम परमात्मा के माने हैं। कबीर जी ने कहा है कि जो परमात्मा का वास्तविक नाम है, वही मेरा कबीर नाम है।

मैं सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान जानता हूँ। मेरे विषय में कोई सतनाम यानि सच्ची भक्ति मंत्र का स्मरण करने वाला ही जानता है। मैं जीव को पूर्ण मुक्ति प्रदान करके निर्भय कर देता हूँ। मैं कबीर अविनाशी हूँ।

निष्कर्ष :- इस विवरण से स्पष्ट है कि श्री कष्ण जी ने गीता में अपने को नाशवान बताया है। परमात्मा कबीर जी ने अपने को अविनाशी बताया है।

कबीर जी ने बताया है कि :-

कबीर बेद मेरा भेद है मैं ना बेदन के माही। जोन बेद से मैं मिलूं, चारों बेद जानते नांही।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि चारों वेद मेरी महिमा से भरे पड़े हैं। परन्तु मेरी प्राप्ति की विधि इन चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में नहीं। मेरी प्राप्ति की विधि सूक्ष्मवेद यानि तत्वज्ञान में वर्णित है। वह ज्ञान वेदों के ज्ञान से भिन्न है।

प्रमाण के लिए वेदों के कुछ मंत्र प्रस्तुत करता हूँ :-

जैसा कि परमेश्वर कबीर जी ने उपरोक्त शब्द वाणी में स्वयं कहा है कि मैं ऊपर के लोक से चलकर पथ्वी पर आया हूँ। मेरे इस भेद को कोई नहीं जानता। संत गरीबदास जी ने बताया है कि :-

गरीब, अजब नगर में ले गया मुझको सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति सूते चादर तान।

अर्थात् गरीब दास संत जी ने बताया है कि सतगुरु कबीर जी ऊपर के लोक से चलकर पथ्वी पर आकर मुझे अपने साथ ऊपर एक अद्भुत नगर यानि लोक में ले गये मैं बेफिकर हो गया हूँ। कि मत्यु के पश्चात् अति सुख दायी सुख सागर सतलोक में सतभक्ति करके चला जाऊँगा।

वेद भी यही कहते हैं कि परमेश्वर ऊपर के लोक में विराजमान है। वहाँ से चलकर पथ्वी पर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको उपदेश देता है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान व अपने मुख से वाणी बोलकर बताता है जिसे तत्वज्ञान (सूक्ष्म वेद) कहते हैं।

प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मंत्र 3 :-

अयम् विश्वानि तिष्ठतिं पुनानों भुवनोपरि सोमः देवः न सूर्यः।

अर्थात् जैसे सूर्य ऊपर आकाश में रहकर सर्व को प्रकाश व उष्णता प्रदान करता है। ऐसे यह अमर परमेश्वर सबको पवित्र करता हुआ सम्पूर्ण ब्रह्मण्डों के ऊपर के भाग में (तिष्ठति) विराजमान है यानि एक स्थान पर बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26 :-

इन्दुः पुनानः अति गाहते मंयः विश्वानि कण्वन सुपथानि यज्यवे।
गाः कण्वानः निर्जिनम् हर्यत् कविर् अत्यो न क्रीलन् परि वारम् अर्यति।।(26)

अर्थात् यज्ञ यानि धार्मिक अनुष्ठान अर्थात् पूजा करने वाले भक्तों के लिए परमेश्वर सब रास्तों को सुगम करता हुआ उनके कष्टों को समाप्त करता है और साधक के पाप नाश करके शुद्ध करता है। अपने तेजोमय रूप को सरल यानि हल्के प्रकाशयुक्त करके कविर्देव यानि कविर परमात्मा विद्युत यानि आकाशीय बिजली के समान तीव्र गति से चलकर आता है। बिजली की तरह क्रीड़ा करता हुआ श्रेष्ठ पुरूषों यानि नेक आत्मा भक्तों को मिलता है। वह कविर् यानि कविर्देव है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 :-

असावि सोमः अरूषः वंषा हरिः राजेव दस्मः अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानः वारम् पर्येति अव्ययम् श्येनः न योनि घंतवन्तम् आसदम्।।(1)

अर्थात् जो सबकी उत्पति करने वाला तेजोमय शरीर युक्त परमेश्वर यथार्थ अध्यात्मिक ज्ञान तथा सुखों की वर्षा करने वाला पापों का हरण करने वाला है। वह (राजेव) राजा के समान (दस्मः) दर्शनीय है यानि वह पूर्ण परमात्मा ऊपर अपने निज लोक रूप राजधानी में सिंहासन पर विराजमान है। उसकी छवि देखने में राजा के समान है। वही परमेश्वर वहाँ से चलकर पथ्वी आदि लोक-लोकान्तरों

में ज्ञान देने के लिए आता है। उसकी अमतवाणी गूंज रही है, वह (वारम्) वरणीय पुरूषों यानि श्रेष्ठ आत्माओं को जो दढ़ भक्त होता है। अपनी अमतवाणी के आशीर्वाद से पवित्र करता हुआ प्राप्त होता है। जिस प्रकार (श्येनः) आकाशीय बिजली स्नेह वाले स्थानों को आधार बनाकर प्राप्त होती है। उसी प्रकार परमेश्वर अपने प्रिय पात्रों को प्राप्त होता है।

भावार्थ :- परमात्मा सबसे ऊपर के लोक सतलोक में सिहांसन पर एक सम्राट के समान सिर के ऊपर मुकुट, ऊपर छतरी धारण किए हैं। एक गुमट वाले महल में बैठा है। परमात्मा देखने में राजा के समान, नर यानि मनुष्य आकार में है। जैसे आकाशीय बिजली उसी धातु पर गिरती है जो उसे आकर्षित करती है। इसी प्रकार परमात्मा अपनी राजधानी से चलकर पथ्वी आदि लोकों पर आता है। जो दढ़ भक्त होते हैं, उनसे आकर्षित होकर उन अच्छी आत्माओं को प्राप्त होता है। उनको यथार्थ अध्यात्म ज्ञान यानि तत्वज्ञान का उपदेश करता है।

कबीर परमेश्वर जी अपने दढ़ भक्तों को ऊपर से आकर मिले वे निम्न हैं :-

1. सेठ धर्मदास जी गाँव-बाँधवगढ़ (मध्यप्रदेश), **2.** श्री नानक देव जी सिख धर्म के प्रवर्तक।
3. श्री दादू दास जी। **4.** संत गरीबदास जी, गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा।
5. श्री मलूक दास जी। **6.** श्री घीसा दास जी, गाँव-खेखड़ा, जिला-बागपत, उत्तरप्रदेश।

विवेचन :- चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) परमात्मा का परिचय बताते हैं। परमात्मा कैसा है? क्या लीला करता है? कहाँ रहता है? उसे प्राप्त करने की विधि यानि साधना कौन सी है? चारों वेदों को हिन्दू धर्म यानि सनातन पंथ वाले सत विद्या का स्रोत मानते हैं। उपरोक्त व आगे जो वेद मंत्र बताये जाऐंगें, इनमें स्पष्ट है कि परमात्मा ऐसी लीला करता है। वेदों में वर्णित परमात्मा के लक्षणों में केवल कबीर परमेश्वर जुलाहा (धाणक-कोली) ही खरा उतरता है। वेदों में कविर्देव नाम कबीर परमेश्वर का बोध है। इसलिए कबीर जुलाहा पूर्ण परमात्मा है। **(Kabir the weaver is complete God.)**

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2 :-

कविर्वेध्स्या पर्येषि माहिनम् अत्यः न मंष्टः अभि वाजम् अर्षसि।
अपसेधन् दुरिता सोम मलय घतम् वसानःपरियासि निर्णिजम्।। (2)

अर्थात् हे परमेश्वर! आप उपदेश करने यानि यथार्थ आध्यात्मिक व संसारिक ज्ञान यानि तत्वज्ञान बताने की इच्छा से महापुरूषों को प्राप्त होते हो। उनको अपने ऊपर के लोकों से चलकर आकर मिलते हो। आप अत्यंत गतिशील पदार्थ के समान तीव्रगामी होकर यानि तेज चलकर हमारी अध यात्मिक अनुष्ठानों में अवश्य पहुँचते हो। आप कविर्देव यानि कबीर प्रभु हैं। {वेदों में परमेश्वर का वास्तिवक नाम जो उनका शरीर का है, वह कविर्देव लिखा है। हम व पूर्व के सब संत 'व' को 'ब' बोलते हैं। जैसे वेद को बेद बोलते हैं। इसी प्रकार वेदों में लिखे कविर्देव को कबीर परमात्मा कहने लगे। परमात्मा ने भी संतों को इसी नाम से अपना परिचय दिया। मुसलमान धर्म प्रवर्तक हजरत मुहम्मद जी को भी कबीर परमेश्वर मिले। उनको भी अपना नाम कबीर अल्लाह बताया था। उसी नाम को अल्लाह अकबीर, अल्लाह अकबर, अल्लाह कबीरन् आदि उच्चारण करते हैं।} हे कविर्देव यानि कबीर परमेश्वर! आप शुद्ध स्वरूप हो, पापनाशक हो। हमारे पापों को दूर करो। जिन पापों के कारण जीव कष्ट भोगता है, उनको समाप्त करो। यह शक्ति केवल आप कविर्देव में है। आप जैसे अपनी लीला करते हैं। वही लीला करके यानि सशरीर प्रकट होकर हमारी सुध लो।

ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 96 मंत्र 17 :-

शिशुम जज्ञानम् ह्वर्यतम् मंजन्ति शुभ्भन्ति वहिन् मरूतः गणेन।
कविर्गीर्भि काव्येना कविः सन्त् सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्।। (17)

अर्थात् जैसा कि परमेश्वर कबीर जी ने अपने प्रिय भक्त धर्मदास जी तथा प्रिय दृढ़ भक्त गरीबदास जी को बताया था कि मैं चारों युगों (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग) में सशरीर प्रकट होता हूँ। संसार में प्रकट होने की दो प्रकार की लीला करता हूँ :-

1. प्रथम लीला :- प्रत्येक युग में शिशु यानि नवजात बालक का रूप बनाकर कमल के फूल पर विराजमान होता हूँ। वहाँ से निःसंतान दंपत्ति मेरी गुप्त प्रेरणा से अपने घर ले जाते हैं। बड़ा होने की लीला करके मैं तत्वज्ञान अपने मुख कमल से बोलकर बताता हूँ जो कबीर वाणी द्वारा (वेदों में कविर्गीर्भि) काव्येना यानि कवित्व से दोहों, चौपाईयों, शब्दों यानि कविताओं के रूप में बोलने के कारण मैं कवि भी उपाधि भी प्राप्त करता हूँ। परंतु मैं पूर्ण परमात्मा हूँ। {**कबीर वाणी** = हम ही अलख अल्लाह हैं, मूल रूप करतार। अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड में मैं ही सिरजनहार। **अर्थात् कबीर जी ने 600 वर्ष पूर्व बोली कबीर वाणी में बताया है कि मैं वह अलख अल्लाह हूँ जिसको कोई नहीं जानता। मैं ही संसार रूप वक्ष की जड़ (Root) हूँ यानि सबका धारण-पोषण करने वाला हूँ। सर्व ब्रह्मण्डों की उत्पत्ति भी मैंने ही की है।**}

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 के अगले मंत्र 18 में स्पष्ट है जो आगे बताया जायेगा।

2. दूसरी प्रकार की लीला :- मैं (कबीर) कभी भी किसी भी समय साधु वेश में प्रकट होकर अच्छी आत्माओं को मिलता हूँ। उनको सत्य आध्यात्मिक ज्ञान बताता हूँ। {**जिन-जिनको परमात्मा कलयुग में मिले हैं, उनके नाम पूर्व में लिख दिये हैं। शिशु रूप में प्रकट होने के उपलक्ष्य में यह संदेश प्रकाशित किया जा रहा है।**} **कबीर जी ने बताया है कि मैं चारों युगों में शिशु रूप वाली लीला करता हूँ।**

सतयुग में सतसुकत कह टेरा, त्रेता नाम मुनिन्दर मेरा। द्वापर में करूणामय कहाया, कलयुग नाम कबीर धराया।।

अर्थात् कबीर जी ने बताया था कि सतयुग में मेरा नाम सतसुकत था। त्रेता युग में मुनिन्द्र नाम था। द्वापर में करूणामय था तथा कलयुग में मैंने अपना नाम कबीर धराया है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 17 में कहा है कि :-

सरलार्थ :- (शिशुम् जज्ञानम् ह्वर्यन्तम्) परमेश्वर जान-बूझकर यानि अपने सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार तत्वज्ञान बताने के उद्देश्य से शिशु रूप में प्रकट होता है। उस बालक का तेज बहुत होता है। बड़ा होकर तत्वज्ञान बताता है। उनके ज्ञान को सुनकर (मरूतो गणेन) भक्तों का समूह उस परमात्मा का अनुयाई बन जाता है। उन भक्तगणों द्वारा परमात्मा की महिमा की जाती है। (मंजन्ति शुभ्यन्ति) परमात्मा द्वारा बताया गया तत्वज्ञान बुद्धिजीवी व्यक्तियों को समझ आता है जो बहुत शुभकारक है। वह साधना (वहिन्) शीघ्र लाभ देने वाली है। (कविः सोम) अमर परमात्मा कविर्देव तत्वज्ञान (काव्येना) कवित्व से यानि शब्दों, दोहों, चौपाईयों के रूप में (पवित्रम्) पवित्र (कविर्गीर्भि) कविर्वाणी द्वारा यानि कबीर वाणी द्वारा (अत्येति रेभन् सन्) अधिक ऊँची आवाज में गर्ज-गर्जकर बोलकर सुनाता हुआ लीला करता है। कहीं बीच बाजार या चौराहों पर खड़ा होकर गानों के रूप में गाने लग जाता है। आगे मंत्र 18 में कहा है कि इसी कारण से परमात्मा एक प्रसिद्ध कवि की पदवी प्राप्त करता है।

ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 96 मंत्र 18 :-

ऋषिमना य ऋषिकत् स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कविनाम्।

तंतीयम् धाम महिषः सिषान् सोमः विराजम् अनुराजति स्तुप् (18)

अर्थात् (य) जो संत या ऋषि रूप में प्रकट (ऋषिकत्) ऋषि द्वारा रची गई (सहस्रणीथः) हजारों की सँख्या में वाणी (ऋषिमना)साधु स्वभाव के भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग के समान सुखदाई होती है। उसी के कारण वह परमात्मा (कविनाम् पदवीः) प्रसिद्ध कवियों में कवि की पदवी भी प्राप्त करता है यानि तत्वज्ञान को दोहों, चौपाईयों, शब्दों के रूप में वाणी बोलने के कारण पूर्ण परमात्मा को कवि भी कहते हैं। परन्तु वह (सोम सन्) अमर परमात्मा होता है। वह परमात्मा (महिषः) बड़ी पथ्वी पर यानि सतलोक में (तंतीयम् धाम) तीसरे पष्ठ यानि भाग पर (सिषासन) सर्व की पालन की इच्छा करता हुआ (अनुराजति) तेजोमय शरीर युक्त (स्तुप) गुम्बज वाले महल में (विराजम्) विराजमान है। वहाँ राजा के समान बैठा है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मंत्र 3 में भी प्रमाण है कि परमात्मा (विश्वानि भूवनोपरि तिष्ठन्ति) सम्पूर्ण ब्रह्मण्डों के ऊपर के भाग में बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मंत्र 2 :-

हरिः संजानः पथ्याम् ऋतस्य इयर्ति वाचम् अरितेव नावम्।
देवः देवानांम् गुह्यानि नाम अविष्कणोति बर्हिष प्रवाचे।।

अर्थात् (हरिः संजानः) वह पूर्वोक्त परमेश्वर अपना अन्य सरल शरीर संजन करके पथ्वी पर प्रकट होता हुआ (ऋतस्य पथ्याम् वाचम्) वाणी द्वारा भक्ति के सत्य मार्ग को कहता है और भक्तों को (इयर्ति) सत्य साधना करने की प्रेरणा करता है। परमात्मा द्वारा बताई सत्य साधना साधक को ऐसे भवसागर से पार कर देती है जैसे (अरितेव नावम्) नौका दरिया से पार लगाती है। (देवानाम् देवः) सब देवों का देव अर्थात् सर्व प्रभुओं का प्रभु यानि परमेश्वर (बर्हिषि प्रवाचे) वाणी रूपी यज्ञ के लिए यानि तत्वज्ञान द्वारा (गुह्यानि) गुप्त (नाम) भक्ति के नामों यानि मंत्रों का (अविष्कणोति) आविष्कार करता है। यानि जो यथार्थ भक्ति मंत्र प्रचलित ग्रन्थों में नहीं होते, उनको प्रकट करता है।

कबीर परमेश्वर जी ने अपनी अमतवाणी में (तत्वज्ञान में) कहा है कि :-

सोहम् शब्द हम जग में लाए। सार शब्द हम गुप्त छुपाए।।
सोहम् ऊपर और है सतसुकत एक नाम। सब हंसों का जहां बास है बस्ती है बिन थाम।।

अर्थात् कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि मैंने ''सोहं'' नाम का आविष्कार किया है यानि जगत में लाए हैं प्रकट किया है। इस सोहं से ऊपर यानि अन्य श्रेष्ठ नाम है। वह अभी जो मैंने छुपा रखा है, इसको इस समय तक यानि कलियुग पाँच हजार पाँच सौ पांच वर्ष बीतने तक (सन् 1997 कलयुग में 5505 वर्ष पूरे कर चुका है, यहाँ तक) छुपा कर रखना था। कबीर सागर ग्रन्थ में परमात्मा ने कहा है किः-

धर्मदास मेरी लाख दुहाई सारशब्द बाहर ना जाई।
सारशब्द बाहर जो परही। बिचली पीढ़ी हंस नहीं तिरही।।
सारशब्द तब तक छुपाई। जब पांच हजार पांच सौ पांच कलयुग न बीत जाई।।

अर्थात् कबीर जी ने ये दोनों नाम (सोहं और सारशब्द) संत धर्मदास जी को बताए थे, परंतु अन्य को बताने के लिए मना किया था। कहा था कि कलयुग के उपरोक्त समय तक सार शब्द छुपा कर रखना है। यदि ऐसा नहीं किया तो बिचली पीढ़ी यानि सन् 1997 समय से जो सत्य भक्ति मार्ग चलना है, ये जीव पार नहीं हो पाऐंगे। उस समय यानि कलयुग के 5505 वर्ष पूरे होने पर एक महापुरूष इस सारशब्द को मेरे आदेश से उपदेशी को बताएगा। सारा संसार उस महापुरूष से दीक्षा लेगा। उस समय

कलयुग में ही सत्ययुग की शुरूआत होगी। सर्व नर-नारी शुद्ध आत्मा वाले परमात्मा से डरने वाले पाप त्यागकर पुण्य व परमार्थ करने वाले होगें। सर्व धर्म व जाति एक मानव धर्म व जीव जाति रहेगी।

यह प्रमाण पवित्र कबीर सागर ग्रन्थ के अध्याय स्वसमवेद बोध के पष्ठ 121 व 178 पर है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 :- इस मंत्र में कहा है कि परमात्मा तत्वज्ञान से (कणानः पवते कवियन् न व्रजम्) कवियों के समान आचरण करता हुआ विचरण करता हुआ सर्व की आत्मा को पवित्र करता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 20 मंत्र 1 :-

प्र कविर्देव वितये अव्यः वारेभि अर्षति साह्वान् विश्वाः अभि स्पर्धः

अर्थात् (प्र) वेद ज्ञान दाता काल ब्रह्म से दूसरा (कविर्देव) कविर्देव यानि कबीर परमेश्वर (वारेभिः) श्रेष्ठ आत्माओं को (वीतये) भक्ति धन की प्राप्ति के लिए (अर्षति) ज्ञान देता है। वह (अव्यः) अविनाशी सबका रक्षक है। (साह्वान्) सहनशील है। (विश्वा) सर्व तत्व ज्ञानहीनों को (स्पर्धः) अध्यात्म ज्ञान गोष्ठी की स्पधा रूपी वाक युद्ध में (अभि) तिरस्कत करता है यानि अज्ञानियों को पराजित कर देता है।

भावार्थ :- इस वेद मंत्र में भी यही प्रमाण है कि कविर्देव अर्थात् कबीर परमात्मा अच्छी आत्माओं को ज्ञान देता है। अज्ञानियों को तिरस्कत करता है वह काल पुरूष से अन्य है।

अज्ञानियों को तिरस्कत करने के प्रमाण में कथा :-

''शास्त्रार्थ महर्षि सर्वानन्द तथा परमेश्वर कबीर(कविर्देव) का''

सर्वानन्द नाम का एक महर्षि था। उसकी माता श्रीमती शारदा देवी प्रारब्ध के पाप कर्म से पीड़ित थी। उसने सर्व पूजाऐं व जन्त्र-मन्त्र कष्ट निवारण के लिए वर्षों किए। शारीरिक पीड़ा निवारण के लिए वैद्यों की दवाईयाँ भी खाई, परन्तु कोई राहत नहीं मिली। उस समय के महर्षियों से उपदेश भी प्राप्त किया, परन्तु सर्व महर्षियों ने कहा कि बेटी शारदा यह आप का पाप कर्म दण्ड प्रारब्ध कर्म का है, यह क्षमा नहीं हो सकता, यह भोगना ही पड़ता है। उदाहरण दिया कि भगवान श्री राम ने बाली का वध किया था, उस पाप कर्म का दण्ड श्री राम(विष्णु) वाली आत्मा ने श्री कष्ण बन कर भोगा। बाली वाली आत्मा शिकारी बनी। जिसने श्री कष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मारकर वध किया। इस प्रकार गुरु जी व महन्तों व संतों-ऋषियों के विचार सुनकर दुःखी मन से भक्तमति शारदा अपना प्रारब्ध पापकर्म का कष्ट रो-रोकर भोग रही थी। एक दिन किसी निजी रिश्तेदार के कहने पर काशी में (स्वयंभू) स्वयं सशरीर प्रकट हुए (कविर्देव) कविर परमेश्वर अर्थात् कबीर प्रभु से उपदेश प्राप्त किया तथा उसी दिन कष्ट मुक्त हो गई। क्योंकि पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में लिखा है कि ''कविरंघारिरसि'' अर्थात् (कविर्) कविर्देव यानि कबीर प्रभु (अंघारि) पाप का शत्रु (असि) है। फिर इसी पवित्र यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि परमात्मा (एनसः एनसः) अधर्म के अधर्म अर्थात् पापों के भी पाप घोर पाप को भी समाप्त कर देता है। प्रभु कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने कहा बेटी शारदा यह सुख आप के भाग्य में नहीं था, मैंने अपने कोष से प्रदान किया है तथा पाप विनाशक होने का प्रमाण दिया है। आप का पुत्र महर्षि सर्वानन्द जी कहा करता है कि प्रभु पाप क्षमा (विनाश) नहीं कर सकता तथा आप मेरे से उपदेश प्राप्त करके आत्म कल्याण करो। भक्तमति शारदा जी ने स्वयं आए परमेश्वर कबीर प्रभु (कविर्देव) से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाया। महर्षि सर्वानन्द जी को जो भक्तमति शारदा का पुत्र था, शास्त्रार्थ का बहुत चाव था। उसने अपने समकालीन सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ करके पराजित कर दिया। फिर सोचा कि जन - जन को कहना पड़ता है कि मैंने सर्व विद्वानों पर विजय प्राप्त कर ली है। क्यों न अपनी माता जी से अपना

नाम सर्वाजीत रखवा लूं। यह सोच कर अपनी माता श्रीमति शारदा जी के पास जाकर प्रार्थना की। कहा कि माता जी मेरा नाम बदल कर सर्वाजीत रख दो। माता ने कहा कि बेटा सर्वानन्द क्या बुरा नाम है? महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा माता जी मैंने सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया है। इसलिए मेरा नाम सर्वाजीत रख दो। माता जी ने कहा कि बेटा एक विद्वान मेरे गुरु महाराज कविर्देव (कबीर प्रभु) को भी पराजित कर दे, फिर अपने पुत्र का नाम आते ही सर्वाजीत रख दूंगी। माता के ये वचन सुन कर श्री सर्वानन्द पहले तो हँसा, फिर कहा माता जी आप भी भोली हो। वह जुलाहा (धाणक) कबीर तो अशिक्षित है। उसका क्या पराजित करना? अभी गया अभी आया।

महर्षि सर्वानन्द जी सर्व शास्त्रों को एक बैल पर रख कर उस मोहल्ले (Colony) में गया जिसमें कबीर परमेश्वर जी की झोंपड़ी थी। परमेश्वर कबीर जी की धर्म की बेटी कमाली कूएँ पर मिली। वह जल निकाल रही थी। सर्वानन्द को अचानक भयंकर प्यास लगी। उसने लड़की से कहा कि लड़की! शीघ्र पानी पिला, मेरे प्राण जाने वाले हैं। लड़की ने बाल्टी से पानी निकालकर सर्वानन्द को पिलाया। उस समय जुलाहा कॉलोनी के व्यक्ति अपने-अपने घर से देख रहे थे तथा विचार कर रहे थे कि यह ब्राह्मण लगता है जो गलती से यहाँ आ गया है। प्यास शांत होने के बाद सर्वानन्द ने इघर-उधर देखा कि किसी ने मुझे जुलाहों के कूएं का पानी पीते हुए देख तो नहीं लिया। देखा तो बहुत सारे स्त्री-पुरूष देख रहे थे, हँस रहे थे। अपनी लाज रखने के उद्देश्य से पूछा कि हे लड़की! यह किस जाति वालों का कुँआ है। कमाली ने कहा कि विप्र जी! जुलाहों की कॉलोनी में तो जुलाहों का ही कुँआ होता है, ब्राह्मणों का नहीं होता। सर्वानन्द ऊँची आवाज में बोला कि हे मूर्ख लड़की! पहले क्यों नहीं बताया कि यह शूद्रों का कूप है। मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया। लड़की कमाली ने कहा कि विप्र जी! तब आपकी जान जाने वाली थी, अब प्यास बुझ गई तो जाति याद आई है। सर्वानन्द ने कहा कि हे लड़की! कबीर का घर कहाँ है? बताईयेगा। कमाली बोली :-

कबीर का घर शिखर में, जहाँ सलैली गैल। पाँव ना टिकैं पपील (चींटी) के, पंडित लादै बैल।।

भावार्थ :- कमाली बहन ने बताया कि कबीर जी का वास्तविक घर सतलोक में है। वहाँ जाने का मार्ग फिसलना है। सत्य साधना करके उनके घर को प्राप्त किया जाता है। वहाँ तो चींटी भी नहीं जा सकती। आप तो बैल के ऊपर ग्रन्थों को लादे फिर रहे हो जिनमें परमेश्वर प्राप्ति की विधि नहीं है। सर्वानन्द ने कहा, लड़की! सीधी बात कर, यहाँ कॉलोनी में बता कि वे कहाँ रहते हैं? कमाली बहन ने कहा कि हे विप्र जी! मेरे पीछे-पीछे आ जाओ। मैं उन्हीं की बेटी हूँ। बहन कमाली ने अपने घर के द्वार पर आकर कहा आओ महर्षि जी यही है परमपिता कबीर का घर। श्री सर्वानन्द जी ने लड़की कमाली से अपना लोटा पानी से इतना भरवाया कि यदि जरा-सा जल और डाले तो बाहर निकल जाए तथा कहा कि बेटी यह लोटा धीरे-धीरे ले जाकर कबीर को दे तथा जो उत्तर वह देवें वह मुझे बताना। लड़की कमाली द्वारा लाए लोटे में परमेश्वर कबीर (कविर्देव) जी ने एक कपड़े सीने वाली बड़ी सुई डाल दी, कुछ जल लोटे से बाहर निकल कर पथ्वी पर गिर गया तथा कहा पुत्री यह लोटा श्री सर्वानन्द जी को लौटा दो। लोटा वापिस लेकर आई लड़की कमाली से सर्वानन्द जी ने पूछा कि क्या उत्तर दिया कबीर ने? कमाली ने प्रभु द्वारा सुई डालने का वतांत सुनाया। तब महर्षि सर्वानन्द जी ने परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) से पूछा कि आपने मेरे प्रश्न का क्या उत्तर दिया? प्रभु कबीर जी ने पूछा कि क्या प्रश्न था आपका?

श्री सर्वानन्द महर्षि जी ने कहा ''मैंने सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया है। मैंने अपनी माता जी से प्रार्थना की थी कि मेरा नाम सर्वाजीत रख दो। मेरी माता जी ने आपको पराजित करने के पश्चात् मेरा नाम परिवर्तन करने को कहा है। आपके पास लोटे को पूर्ण रूपेण जल से भर कर भेजने का तात्पर्य है कि मैं ज्ञान से ऐसे परिपूर्ण हूँ जैसे लोटा जल से। इसमें और जल नहीं समाएगा, वह बाहर ही गिरेगा अर्थात् मेरे साथ ज्ञान चर्चा करने से कोई लाभ नहीं होगा। आपका ज्ञान मेरे अन्दर नहीं समाएगा, व्यर्थ ही थूक मथोगे। इसलिए हार लिख दो, इसी में आपका हित है।

पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा कि आपके जल से परिपूर्ण लोटे में लोहे की सूई डालने का अभिप्राय है कि मेरा ज्ञान (तत्त्वज्ञान) इतना भारी है कि जैसे सुई लोटे के जल को बाहर निकालती हुई नीचे जाकर रूकी है। इसी प्रकार मेरा तत्त्वज्ञान आपके असत्य ज्ञान(लोक वेद) को निकाल कर आपके हृदय में समा जाएगा। महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा प्रश्न करो। एक बहु चर्चित विद्वान को जुलाहों (धाणकों) के मोहल्ले (कॉलोनी) में आया देखकर आस-पास के भोले-भाले अशिक्षित जुलाहे शास्त्रार्थ सुनने के लिए एकत्रित हो गए। पूज्य कविर्देव ने प्रश्न किया :

कौन ब्रह्मा का पिता है, कौन विष्णु की माँ। शंकर का दादा कौन है, सर्वानन्द दे बताए।।

उत्तर महर्षि सर्वानन्द जी का : - श्री ब्रह्मा जी रजोगुण हैं तथा श्री विष्णु जी सतगुण युक्त हैं तथा श्री शिव जी तमोगुण युक्त हैं। यह तीनों अजर-अमर अर्थात् अविनाशी हैं, सर्वेश्वर - महेश्वर - मत्युं जय हैं। इनके माता-पिता कोई नहीं। आप अज्ञानी हो। आपको शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। ऐसे ही उट-पटांग प्रश्न किया है। सर्व उपस्थित अशिक्षित श्रोताओं ने ताली बजाई तथा महर्षि सर्वानन्द जी का समर्थन किया।

पूज्य कबीर प्रभु (कविर्देव) जी ने कहा कि महर्षि जी आप श्रीमद्देवी भागवत पुराण के तीसरे स्कंद तथा श्री शिव पुराण का छटां तथा सातवां रूद्र संहिता अध्याय प्रभु को साक्षी रखकर गीता जी पर हाथ रख कर पढ़ें तथा अनुवाद सुनाऐं। महर्षि सर्वानन्द जी ने पवित्र गीता जी पर हाथ रख कर शपथ ली की सही-सही सुनाऊँगा।

पवित्र पुराणों को प्रभु कबीर (कविर्देव) जी के कहने के पश्चात् ध्यान पूर्वक पढ़ा। श्री शिव पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार) में पष्ठ नं. 100 से 103 पर लिखा है कि सदाशिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म तथा प्रकति (दुर्गा) के संयोग (पति-पत्नी व्यवहार) से सतगुण श्री विष्णु जी, रजगुण श्री ब्रह्मा जी तथा तमगुण श्री शिवजी का जन्म हुआ। यही प्रकति (दुर्गा) जो अष्टंगी कहलाती है, त्रिदेव जननी(तीनों ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी) की माता कहलाती है।

पवित्र श्री मद्देवी पुराण(गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी) तीसरे स्कंध में पष्ठ नं. 114 से 123 तक में स्पष्ट वर्णन है कि भगवान विष्णु जी कह रहे हैं कि यह प्रकति (दुर्गा) हम तीनों की जननी है। मैंने इसे उस समय देखा था जब मैं छोटा-सा बच्चा था। माता की स्तुति करते हुए श्री विष्णु जी ने कहा कि हे माता मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शिव तो नाशवान हैं। हमारा तो आविर्भाव(जन्म) तथा तिरोभाव(मत्यु) होती है। आप प्रकति देवी हो। भगवान शंकर ने कहा कि हे माता यदि ब्रह्मा व विष्णु आप से उत्पन्न हुए हैं तो मैं शंकर भी आप (दुर्गा) से ही उत्पन्न हुआ हूँ अर्थात् आप मेरी भी माता हो।

महर्षि सर्वानन्द जी पहले सुने सुनाए अधूरे शास्त्र विरुद्ध ज्ञान (लोकवेद) के आधार पर तीनों श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव को अविनाशी व अजन्मा कहा करता था। पुराणों को पढ़ता भी था फिर

भी अज्ञानी ही था। क्योंकि ब्रह्म(काल) पवित्र गीता जी अध्याय 7 श्लोक 10 में कहता है कि मैं सर्व प्राणियों (जो मेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों में मेरे अधीन हैं) की बुद्धि हूँ। जब चाहूँ ज्ञान प्रदान कर दूं तथा जब चाहूँ अज्ञान भर दूं। उस समय पूर्ण परमात्मा द्वारा पुराणों के अध्याय तथा पष्ठ बताने के बाद काल (ब्रह्म) का दबाव हट गया तथा सर्वानन्द जी को स्पष्ट ज्ञान हुआ। वास्तव में ऐसा ही लिखा है। परन्तु मान-हानि के भय से कहा कि मैंने सब पढ़ लिया। ऐसा कहीं नहीं लिखा है। कविर्देव (कबीर परमेश्वर) से कहा तू झूठा है। तू क्या जाने शास्त्रों के विषय में। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। फिर क्या था, सर्वानन्द जी ने धारा प्रवाहित संस्कत बोलना प्रारम्भ कर दिया। बीस मिनट तक कण्ठस्थ की हुई कोई और ही वेदवाणी बोलता रहा, पुराण नहीं सुनाया।

सर्व उपस्थित भोले-भाले श्रोतागण जो संस्कत भाषा को समझ भी नहीं रहे थे, प्रभावित होकर सर्वानन्द महर्षि जी के समर्थन में वाह-वाह महाज्ञानी कहने लगे। भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर (कविर्देव) जी को पराजित कर दिया तथा महर्षि सर्वानन्द जी को विजयी घोषित कर दिया। परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी ने कहा कि सर्वानन्द जी आपने पवित्र गीता जी की कसम खाई थी, वह भी भूल गए। जब आप सामने लिखी शास्त्रों की सच्चाई को भी नहीं मान रहे हो सोए हुए व्यक्ति को जगाया जा सकता है जो जान बूझ कर सोने का बहाना कर रहा हो उसे जगाया नहीं जा सकता।

कबीर जान बूझ साची तजे करै झूठ से नेह। ताकी संगति हे प्रभु स्वपन में भी न दे।

इसलिए हे सर्वानन्द! मैं हारा तुम जीते।

एक जमींदार का पुत्र सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उसने कुछ अंग्रेजी भाषा को जान लिया था। एक दिन दोनों पिता पुत्र खेतों में बैल गाड़ी लेकर जा रहे थे। सामने से एक अंग्रेज कार लेकर आ गया। उसने बैलगाड़ी वालों से अंग्रेजी भाषा में रास्ता जानना चाहा। पिता ने पुत्र से कहा बेटा यह अंग्रेज अपने आपको ज्यादा ही शिक्षित सिद्ध करना चाहता है। आप भी तो अंग्रेजी भाषा जानते हो। निकाल दे इसकी मरोड़। सुना दे अंग्रेजी बोल कर। किसान के लड़के ने अंग्रेजी भाषा में बीमारी की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र पूरा सुना दिया। अंग्रेज उस नादान बच्चे की नादानी को भांप कर कि पूछ रहा हूँ रास्ता, सुना रहा है बीमारी की छुट्टी का प्रार्थना - पत्र। अपनी कार लेकर माथे में हाथ मार कर चल पड़ा। किसान ने अपने विजेता पुत्र की कमर थप-थपाई तथा कहा वाह पुत्र! मेरा तो जीवन सफल कर दिया। आज तुने अंग्रेज को अंग्रेजी भाषा में पराजित कर दिया। तब पुत्र ने कहा पिता जी मुझे माई बैस्ट फ्रेंड एस्से (मेरा खास दोस्त नामक प्रस्ताव) भी याद है। वह सुना देता तो अंग्रेज कार गाड़ी छोड़ कर भाग जाता। इसी प्रकार कविर्देव जी पूछ कुछ रहें हैं और सर्वानन्द जी उत्तर कुछ दे रहे हैं। इस प्रकार शास्त्रार्थ ने तत्त्वज्ञान को उलझा रखा है।

परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा कि सर्वानन्द जी आप जीते मैं हारा। महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा लिख कर दे दो, मैं कच्चा कार्य नहीं करता। परमात्मा कबीर (कविर्देव) जी ने कहा कि यह कपा भी आप कर दो। लिख लो जो लिखना है, मैं अँगूठा लगा दूँगा। महर्षि सर्वानन्द जी ने लिख लिया कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द विजयी हुआ तथा कबीर साहेब पराजित हुआ तथा कबीर परमेश्वर से अँगूठा लगवा लिया। अपनी माता जी के पास जाकर सर्वानन्द जी ने कहा कि माता जी लो आपके गुरुदेव को पराजित करने का प्रमाण। भक्तमति शारदा जी ने कहा पुत्र पढ़ कर सुनाओ। जब सर्वानन्द जी ने पढ़ा उसमें लिखा था कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द पराजित हुआ तथा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) विजयी हुआ।

सर्वानन्द जी की माता जी ने कहा पुत्र आप तो कह रहे थे कि मैं विजयी हुआ हूँ, तुम तो हार कर आये हो। महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा माता जी मैं कई दिनों से लगातार शास्त्रार्थ में व्यस्त था, इसलिए निंद्रा वश होकर मुझ से लिखने में गलती लगी है। फिर जाता हूँ तथा सही लिख कर लाऊँगा। माता जी ने शर्त रखी थी कि विजयी होने का कोई लिखित प्रमाण देगा तो मैं मानूँगी, मौखिक नहीं। महर्षि सर्वानन्द जी दोबारा गए तथा कहा कि कबीर साहेब मेरे लिखने में कुछ त्रुटि रह गई है, दोबारा लिखना पड़ेगा। साहेब कबीर जी ने कहा कि फिर लिख लो। सर्वानन्द जी ने फिर लिख कर अँगूठा लगवाकर माता जी के पास आया तो फिर विपरीत ही पाया। कहा माता जी फिर जाता हूँ। तीसरी बार लिखकर लाया तथा मकान में प्रवेश करने से पहले पढ़ा ठीक लिखा था। सर्वानन्द जी ने उस लेख से दष्टि नहीं हटाई तथा चलकर अपने मकान में प्रवेश करता हुआ कहने लगा कि माता जी सुनाऊँ, यह कह कर पढ़ने लगा तो उसकी आँखों के सामने अक्षर बदल गए। तीसरी बार फिर यही प्रमाण लिखा गया कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द पराजित हुए तथा कबीर साहेब विजयी हुए। सर्वानन्द बोल नहीं पाया। तब माता जी ने कहा पुत्र बोलता क्यों नहीं? पढ़कर सुना क्या लिखा है। माता जानती थी कि नादान पुत्र पहाड़ से टकराने जा रहा है। माता जी ने सर्वानन्द जी से कहा कि पुत्र परमेश्वर आए हैं, जाकर चरणों में गिर कर अपनी गलती की क्षमा याचना कर ले तथा उपदेश ले कर अपना जीवन सफल कर ले। सर्वानन्द जी अपनी माता जी के चरणों में गिर कर रोने लगा तथा कहा माता जी यह तो स्वयं प्रभु आए हैं। आप मेरे साथ चलो, मुझे शर्म लगती है। सर्वानन्द जी की माता अपने पुत्र को साथ लेकर प्रभु कबीर के पास गई तथा सर्वानन्द जी को भी कबीर परमेश्वर से उपदेश दिलाया। तब उस महर्षि कहलाने वाले नादान प्राणी का पूर्ण परमात्मा के चरणों में आने से ही उद्धार हुआ। पूर्ण ब्रह्म कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा सर्वानन्द आपने अक्षर ज्ञान के आधार पर भी शास्त्रों को नहीं समझा। क्योंकि मेरी शरण में आए बिना ब्रह्म(काल) किसी की बुद्धि को पूर्ण विकसित नहीं होने देता। अब फिर पढ़ो इन्हीं पवित्र वेदों व पवित्र गीता जी तथा पवित्र पुराणों को। अब आप ब्राह्मण हो गए हो। ''ब्राह्मण सोई ब्रह्म पहचाने'' विद्वान वही है जो पूर्ण परमात्मा को पहचानकर अपना कल्याण करवाए।

विशेष :- आज सन् 2013 से लगभग 608 वर्ष पूर्व यही पवित्र वेदों, पवित्र गीता जी व पवित्र पुराणों में लिखा ज्ञान कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी ने अपनी साधारण वाणी में भी दिया था। (जब वे पाँच वर्ष के हुए। उसी समय अमत ज्ञान कहना शुरू कर दिया था जो सन् 1493 में धर्मदास जी द्वारा लिखा गया था।) जो उस समय से तथा आज तक के महर्षियों ने व्याकरण त्रुटि युक्त भाषा कह कर पढ़ना भी आवश्यक नहीं समझा तथा कहा कि कबीर तो अज्ञानी है, इसे अक्षर ज्ञान तो है ही नहीं। यह क्या जाने संस्कत भाषा में लिखे शास्त्रों में छुपे गूढ़ रहस्य को। हम विद्वान हैं जो हम कहते हैं वह सब शास्त्रों में लिखा है तथा श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के कोई माता-पिता नहीं हैं। ये तो अजन्मा-अजर-अमर-अविनाशी तथा सर्वेश्वर, महेश्वर, मत्युं जय हैं। सर्व सष्टि रचनहार हैं, तीनों गुण युक्त हैं। आदि आदि व्याख्या ठोक कर अभी तक कहते रहें। आज वे ही पवित्र शास्त्र अपने पास हैं। जिनमें तीनों प्रभुओं (श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण, श्री शिव जी तमगुण) के माता-पिता का स्पष्ट विवरण है। उस समय अपने पूर्वज अशिक्षित थे तथा शिक्षित वर्ग को शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान नहीं था। फिर भी कबीर परमेश्वर (कविर्देव) के द्वारा बताए सत्यज्ञान को जान बूझकर झुठला दिया कि कबीर झूठ कह रहा है किसी शास्त्र में नहीं लिखा है कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के

कोई माता-पिता हैं।

''कबीर जी ने तीनों देवताओं की उत्पत्ति कथा सुनाई''

आज सर्व मानव समाज (बहन-भाई, बालक व जवान तथा बुजुर्ग, बेटे तथा बेटियाँ शिक्षित हैं।) आज कोई यह नहीं बहका सकता कि शास्त्रों में ऐसा नहीं लिखा जैसा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) साहेब जी की अमंत वाणी में कबीर सागर ग्रन्थ में लिखा है।

अमंतवाणी पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो एक राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि राम का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पत्ति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
मां अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
देव निरंजन किन्हाँ भोग विलासा। अष्टांगी को रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उसको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुण का यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

इसके पश्चात् महर्षि सर्वानन्द जी ने चारों वेदों को तत्त्वज्ञान के आधार से समझा। वास्तविकता से

परिचित स्वयं हुआ। कबीर जुलाहे का शिष्य हुआ तथा यही सत्य ज्ञान अन्य को भी समझाया।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ :- कबीर परमश्वेर जी सन् 1398-1518 तक संसार में रहकर अपने परम भक्त धर्मदास जी जो उनके समकालिन थे, को बताया। {धर्मदास जी भी श्री विष्णु जी उर्फ श्री कष्ण जी के परम भक्त थे। बाद में सच्चाई जानकर कबीर परमेश्वर जी की शरण में आए थे।} कबीर जी ने कहा हे धर्मदास! यह सर्व संसार यथार्थ अध्यात्म ज्ञान ना होने के कारण विचलित हैं। कोई भी मोक्ष मार्ग नहीं जानता। इसीलिए मैंने तेरे को यह कथा सुनाई है कि पूर्ण परमात्मा इन देवताओं व काल ब्रह्म से भिन्न है।(यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में है।)

हे धर्मदास! यह कथा आप जगत के जीवों को सुनाओ। उनका भ्रम निवारण करो।

अब मैं (कबीर जी) तेरे को तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) की उत्पत्ति की संक्षिप्त कथा सुनाता हूँ जिससे तेरे सर्व भ्रम नष्ट हो जाऐंगे। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी की माता तो दुर्गा देवी है तथा पिता ज्योति निरंजन यानि काल ब्रह्म है।

मैंने (कबीर जी ने) पहले ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) को उत्पन्न किया। उसके पश्चात् दुर्गा देवी (अष्टांगी) को उत्पन्न किया। दोनों जवान उत्पन्न किए थे। कुछ समय उपरांत ज्योति निरंजन ने देवी के सौंदर्य पर आकर्षित होकर दुर्गा देवी के साथ भोग-विलास (Sex) किया। माया (देवी दुर्गा) को गर्भ रह गया। अष्टांगी देवी ने तीन पुत्रों को जन्म दिया। जिनके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव नाम रखे।

ये तीनों पुत्र अपने पिता काल निरंजन का कार्य कर रहे हैं यानि जीव उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार कार्य कर रहे हैं। इन तीनों देवताओं से प्रभावित होकर इनको सर्वेस्वा मानकर इन्हीं की प्रशंसा व भक्ति साधना करते हैं। जिस कारण से सब भक्त धोखा खा रहे हैं। पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जीव को कैसे हो सकता है? क्योंकि काल निरंजन सर्व जगत को धोखा दिए है। यह एक ब्रह्मण्ड में ऊपर सुन्न स्थान पर अपनी योगमाया से छिपा रहता है। अपने वास्तविक रूप में किसी के समक्ष नहीं आता। (यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में है।) इसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि मैं कभी भी किसी को दर्शन नहीं दूँगा। यह मेरा अटल नियम है। इसी कारण से श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी परमात्मा प्राप्ति के लिए साधना करते हैं। उनको भी आज तक अपने पिता के दर्शन नहीं हुए हैं। इनको भी इस रहस्य का ज्ञान नहीं है जो मैं तेरे को बता रहा हूँ। इसी काल निरंजन को अलख निरंजन भी कहते हैं। यह बड़ा बटपार है यानि धोखेबाज है। इसने देवी के साथ दुर्व्यवहार किया था। उस कारण से इसको शॉप लगा है प्रतिदिन एक लाख मानव शरीर खाने का तथा सवा लाख उत्पन्न करने का। यह अपने तीनों पुत्रों (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव) को भी खाता है यानि उनकी भी मत्यु करता है। इन (देवी दुर्गा और काल ब्रह्म) के तीनों पुत्र हैं। तत्वज्ञान नेत्रहीन व्यक्ति इन तीनों देवताओं को अजर, अविनाशी तथा सर्व के मालिक मानकर धोखा खा रहे हैं।

अकाल पुरूष यानि जिसका काल (नाश) कभी नहीं होता, उस सत्य पुरूष को कोई नहीं जानता। उसकी परख किसी ने नहीं की। काल यानि क्षर पुरूष (नाशवान) को सबने स्वीकार कर लिया। इसको सब जानते हैं कि निराकार परमात्मा है, परंतु आदि दिव्य पुरूष (गीता अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10, 20, 21, 22, अध्याय 18 श्लोक 62, 18 तथा अध्याय 15 श्लोक 1-4, 16-17 में कहे पूर्ण ब्रह्म) को कोई नहीं पहचानता। भोले प्राणी इन तीनों देवताओं की भक्ति करते हैं और इनके अवतारों (राम, कष्ण आदि-आदि) की भक्ति सारा संसार कर रहा है जो पूर्ण मोक्षदायक नहीं है।

कबीर परमेश्वर जी बता रहे हैं कि हे धर्मदास! तीनों देवताओं का यह विस्तत वर्णन है। मैं पुकार-पुकारकर कह रहा हूँ। सबको सुना रहा हूँ। इन तीनों गुणों यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की भक्ति में सब संसार भूला है। पूर्ण परमात्मा के निज नाम यानि सच्चे मंत्र के बिना भवसागर से कैसे पार जाया जा सकता है?

कबीर, तीन देव की जो करते भक्ति, उनकी कबहू ना होवे मुक्ति।

अर्थात् कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि इन तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) की जो भक्ति करते हैं, उनकी मुक्ति कभी नहीं होगी। गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में भी यही प्रमाण है कि जिन साधकों का ज्ञान तीनों गुणों यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव से मिलने वाले क्षिणिक लाभ से हरा जा चुका है, वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मेरी भक्ति नहीं करते।(गीता ज्ञान दाता ने कहा है) अपनी भक्ति को गीता ज्ञान देने वाले ने अध्याय 7 के श्लोक 18 में अनुत्तम (Bad) बताया है।

यही परमेश्वर कबीर जी ने तत्वज्ञान में ऊपर बताया है।

''गीता में तीनों देवताओं की भक्ति न करने का प्रमाण''

प्रश्न 16 : क्या रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शंकर (शिव) की पूजा (भक्ति) करनी चाहिए?

उत्तर : नहीं।

प्रश्न 17 : कहाँ प्रमाण है कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शंकर (शिव) की पूजा (भक्ति) नहीं करनी चाहिए?

उत्तर : श्री मद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 23-24, गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में प्रमाण है कि जो व्यक्ति रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की भक्ति करते हैं, वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मुझे भी नहीं भजते। (यह प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में है। फिर गीता अध्याय 7 के ही श्लोक 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 23-24 में यही कहा है और क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में जिनका वर्णन है), को छोड़कर श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी अन्य देवताओं में गिने जाते हैं। इन दोनों अध्यायों (गीता अध्याय 7 तथा अध्याय 9 में) में ऊपर लिखे श्लोकों में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो साधक जिस भी उद्देश्य को लेकर अन्य देवताओं को भजते हैं, वे भगवान समझकर भजते हैं। उन देवताओं को मैंने कुछ शक्ति प्रदान कर रखी है। देवताओं के भजने वालों को मेरे द्वारा किए विधान से कुछ लाभ मिलता है। परन्तु उन अल्प बुद्धिवालों का वह फल नाशवान होता है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं के लोक में जाते हैं। मेरे पुजारी मुझे प्राप्त होते हैं।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि को त्यागकर जो साधक मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् जिन देवताओं पितरों, यक्षों, भैरों-भूतों की भक्ति करते हैं और मनकल्पित मन्त्रों का जाप करते हैं, उनको न तो कोई सुख होता है, न कोई सिद्धि प्राप्त होती है तथा न उनकी गति अर्थात् मोक्ष होता है। इससे तेरे लिए हे अर्जुन! कर्तव्य (जो भक्ति करनी चाहिए) और अकर्त्तव्य (जो भक्ति न करनी चाहिए) की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। गीता अध्याय 17 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि हे कृष्ण!

(क्योंकि अर्जुन मान रहा था कि श्री कष्ण ही ज्ञान सुना रहा है, परन्तु श्री कष्ण के शरीर में प्रेत की तरह प्रवेश करके काल (ब्रह्म) ज्ञान बोल रहा था जो पहले प्रमाणित किया जा चुका है)। जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर अन्य देवताओं आदि की पूजा करते हैं, वे स्वभाव में कैसे होते हैं? गीता ज्ञान दाता ने उत्तर दिया कि सात्विक व्यक्ति देवताओं का पूजन करते हैं। राजसी व्यक्ति यक्षों व राक्षसों की पूजा तथा तामसी व्यक्ति प्रेत आदि की पूजा करते हैं। ये सब शास्त्रविधि रहित कर्म हैं। फिर गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल मनकल्पित घोर तप को तपते हैं, वे दम्भी (ढ़ोंगी) हैं और शरीर के कमलों में विराजमान शक्तियों को तथा मुझे भी क्रश करने वाले राक्षस स्वभाव के अज्ञानी जान। सूक्ष्मवेद में भी परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कबीर, माई मसानी सेढ़ शीतला भैरव भूत हनुमंत। परमात्मा से न्यारा रहै, जो इनको पूजंत।।

राम भजै तो राम मिलै, देव भजै सो देव। भूत भजै सो भूत भवै, सुनो सकल सुर भेव।।

स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी (रजगुण), श्री विष्णु जी (सत्गुण) तथा श्री शिवजी (तमगुण) की पूजा (भक्ति) नहीं करनी चाहिए तथा इसके साथ-साथ भूतों, पितरों की पूजा, (श्राद्ध कर्म, तेरहवीं, पिण्डोदक क्रिया, सब प्रेत पूजा होती है) भैरव तथा हनुमान जी की पूजा भी नहीं करनी चाहिए।

(पुस्तक ''गीता तेरा ज्ञान अमत'' से कुछ अंश)

प्रश्न 44 (धर्मदास जी का) :- क्या पूर्ण मोक्ष के लिए भगवान विष्णु जी तथा भगवान शंकर जी की पूजा को छोड़ना पड़ेगा?

उत्तर (जिन्दा बाबा जी का) :- इन प्रभुओं को नहीं छोड़ना, इनकी पूजा छोड़नी होगी।

प्रश्न 45 (धर्मदास जी का) :- हे जिन्दा! मैं समझा नहीं। इन विष्णु और शंकर प्रभुओं को नहीं छोड़ना और पूजा छोड़नी पड़ेगी। मेरी संकीर्ण बुद्धि है। मैं महाअज्ञानी प्राणी हूँ। कप्या विस्तार से बताने की कपा करें।

उत्तर :- (जिन्दा महात्मा जी का) : हे धर्मदास जी! आप इनकी साधना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहे हो। जिससे आपजी को लाभ नहीं मिल रहा। इन देवताओं से लाभ लेने के साधना के मन्त्र मेरे पास हैं। जैसे भैंसा है, उसको भैंसा-भैंसा करते रहो, वह आपकी ओर नहीं देखेगा। उसका एक विशेष मन्त्र हुर्र-हुर्र है। उसको सुनते ही वह तुरंत प्रभावित होता है और आवाज लगाने वाले की ओर खींचा चला आता है। इसी प्रकार इन सर्व आदरणीय देवताओं के निज मन्त्र हैं। जिनसे वे पूर्ण लाभ तुरंत देते हैं। प्रिय पाठको! वही मन्त्र मेरे पास (संत रामपाल दास) के पास हैं जो परमेश्वर जी ने गुरू जी के माध्यम से मुझे दिए हैं, आओ और प्राप्त करो।

जैसा कि आपको बताया था कि यह संसार एक वक्ष जानो। परम अक्षर पुरुष इसकी जड़ें मानो, अक्षर पुरुष तना जानो, क्षर पुरुष मोटी डार तथा तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी) इस संसार रुपी वक्ष की शाखाऐं जानों और पात रुप संसार।

यदि आप कहीं से आम का पौधा लेकर आए हो तो गढ्ढा खोदकर उसकी जड़ों को उस गढ्ढे में मिट्टी में दबाओगे और जड़ों की सिंचाई करोगे। तब वह आम का पेड़ बनेगा और उस वक्ष की शाखाओं को फल लगेंगे। इसलिए वक्ष की शाखाओं को तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु इनको जड़ के स्थान पर गढ्ढे में मिट्टी में दबाकर इनकी सिंचाई नहीं की जाती। ठीक इसी प्रकार संसार रुपी वक्ष की जड़

अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को इष्ट रुप में प्रतिष्ठित करके पूजा करने से शास्त्रानुकूल साधना होती है जो परम लाभ देने वाली होती है। इस प्रकार किए गए भक्ति कर्मों का फल यही तीनों देवता (संसार वक्ष की शाखाऐं) ही कर्मानुसार प्रदान करते हैं। इसलिए इनकी पूजा छोड़नी होती है। लेकिन इनको छोड़ा (तोड़ा) नहीं जा सकता। यही प्रमाण श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 3 श्लोक 8 से 15 तक में भी है। कहा है कि :-

❖ हे अर्जुन! तू शास्त्रविहित कर्म कर अर्थात् शास्त्रों में जैसे भक्ति करने को कहा है, वैसा भक्ति कार्य कर। यदि घर त्यागकर जंगलों में चला गया अर्थात् तू कर्म सन्यासी हो गया या एक स्थान पर बैठकर हठपूर्वक साधना करने लगेगा तो तेरा शरीर पोषण का निर्वाह भी नहीं होगा। इसलिए कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करते-करते भक्ति कर्म करना श्रेष्ठ है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 8)

❖ जो साधक शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् शास्त्रानुकूल भक्ति कर्मों के अतिरिक्त दूसरे कर्मों में लगा हुआ मनुष्य समुदाय कर्मों के बन्धन में बंधकर जन्म-मरण के चक्र में सदा रहता है। इसलिए हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! शास्त्रविरुद्ध भक्ति कर्म जो कर रहा है, उससे आसक्ति रहित होकर शास्त्रानुकूल भक्ति कर्म कर। (गीता अध्याय 3 श्लोक 9)

❖ संसार की रचना करके प्रजापति (कुल के मालिक) ने सर्व प्रथम मनुष्यों की रचना करके साथ-साथ यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान देते हुए इनसे कहा था कि तुम लोग इस तरह बताए शास्त्रानुकूल कर्मों द्वारा वद्धि को प्राप्त होओ। इस प्रकार शास्त्रानुकूल की गई भक्ति तुम लोगों को इच्छित भोग प्राप्त कराने वाली हो। (गीता अध्याय 3 श्लोक 10)

❖ इस प्रकार शास्त्रानुकूल भक्ति द्वारा अर्थात् संसार रुपी वक्ष की जड़ों (मूल अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म) की सिंचाई अर्थात् पूजा करके देवताओं अर्थात् संसार रुपी वक्ष की तीनों गुण रुपी शाखाओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिवजी) को उन्नत करो। वे देवता (संसार वक्ष की शाखा तीनों देवता) आपको कर्मानुसार फल देकर उन्नत करें। इस प्रकार एक-दूसरे से उन्नत करके परम कल्याण अर्थात् पूर्णमोक्ष को प्राप्त हो जाओगे (गीता अध्याय 3 श्लोक 11)

❖ शास्त्रविधि अनुसार किए गए भक्ति कर्मों अर्थात् यज्ञों द्वारा बढ़ाए हुए देवता अर्थात् संसार रुपी वक्ष की जड़ अर्थात् मूल मालिक (परम अक्षर ब्रह्म) को इष्ट रुप में प्रतिष्ठित करके भक्ति कर्म से बढ़ी हुई शाखाएं (तीनों देवता) तुम लोगों को बिना माँगे ही कर्मानुसार इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। जैसे आम के पौधे की जड़ की सिंचाई करने से पेड़ बनकर शाखाएं उन्नत हो गई। फिर उन शाखाओं को अपने आप फल लगेंगे। झड़-झड़कर गिरेंगे, व्यक्ति को जो कर्मानुसार धन प्राप्त होता है, वह उपरोक्त विधि से होता है। यदि कोई व्यक्ति उन देवताओं (शाखाओं) द्वारा दिए धन में से पुनः दान-पुण्य नहीं करता अर्थात् जो पुनः शास्त्रानुकूल साधना धर्म-कर्म नहीं करता, केवल अपना ही पेट भरता है, स्वयं ही भोगता रहता है। वह तो परमात्मा का चोर ही है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 12)

❖ शास्त्रानुकूल भक्ति की विधि में सर्वप्रथम परमात्मा को भोग लगाया जाता है। भण्डारा करना होता है। पहले परम अक्षर ब्रह्म को इष्ट रुप में पूजकर भोग लगाकर शेष भोजन को भक्तों में बाँटा जाता है। उस बचे हुए अन्न को सत्संग में उपस्थित अच्छी आत्माएं ही खाती हैं क्योंकि पुण्यात्माएं ही परमात्मा के लिए समय निकालकर धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होते हैं। इसलिए कहा है कि उस यज्ञ से बचे

हुए अन्न को खाने वाले सन्तजन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। जो पापी लोग होते हैं, जो तत्वदर्शी सन्त के सत्संग में नहीं जाते, उनको ज्ञान नहीं होता। वे पापात्मा अपना शरीर पोषण करने के लिए ही भोजन पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं क्योंकि भोजन खाने से पहले हम भक्त-सन्त सब परम अक्षर ब्रह्म को भोग लगाते हैं। जिस से सारा भोजन पवित्र प्रसाद बन जाता है, जो ऐसा नहीं करते, वे परमात्मा के चोर हैं। भगवान को भोग न लगा हुआ भोजन पाप का भोजन होता है। इसलिए कहा है जो धर्म-कर्म शास्त्रानुकूल नहीं करते, वे पाप के भागी होते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 13)

❖ सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अन्न वर्षा से होता है। वर्षा यज्ञ अर्थात् शास्त्रानुकूल धार्मिक अनुष्ठान से होती है। यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रानुकूल कर्मों से होते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 14)

❖ कर्म तो ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष से उत्पन्न हुए हैं क्योंकि जहाँ सर्व प्राणी सनातन परम धाम में रहते थे। वहाँ पर बिना कर्म किए सर्व सुख व पदार्थ उपलब्ध थे। यहाँ के सर्व प्राणी अपनी गलती से क्षर पुरुष के साथ आ गए। अब सबको कर्म का फल ही प्राप्त होता है। कर्म करके ही निर्वाह होता है। इसलिए कहा है कि कर्म को ब्रह्म (क्षर पुरुष) से उत्पन्न जान और ब्रह्म को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न जान। यही प्रमाण अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक 1 मंत्र 3 में भी है ''ब्रह्म ब्रह्मणः उज्जभार'' यानि (ब्रह्मणः) सच्चिदानंद घन ब्रह्म = परम अक्षर पुरूष ने (ब्रह्म) ब्रह्म को (उज्जभार) उत्पन्न किया।

(नोट :- गीता अध्याय 3 के इस श्लोक नं. 14 में ''अक्षर'' शब्द का अर्थ अविनाशी परमात्मा ठीक है। परन्तु जहाँ क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष का वर्णन है, वहाँ अक्षर पुरुष व क्षर पुरुष दोनों नाशवान कहे हैं। वहाँ पर अक्षर का अर्थ वही ठीक है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में वर्णन है, यहाँ 'अक्षर' का अर्थ अविनाशी परमात्मा है क्योंकि सष्टि रचना से स्पष्ट होता है कि ब्रह्म की उत्पत्ति सत्यपुरुष (अविनाशी परमात्मा) ने की थी।) इससे सिद्ध हुआ कि (सर्वगतम् ब्रह्म) अर्थात् जिस परमात्मा की पहुँच सर्व ब्रह्माण्डों में है, जो सर्व का मालिक है, वह परमात्मा सदा ही यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में प्रतिष्ठित है। भावार्थ है कि परम अक्षर ब्रह्म को इष्टदेव रुप में प्रतिष्ठित करके धार्मिक अनुष्ठान अर्थात् यज्ञ करने से शास्त्रविधि अनुसार कर्म करने से साधक को भक्ति लाभ मिलता है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है।

देखें यह चित्र पष्ठ 20 पर, इसमें पौधे की शाखाओं को गढ्ढ़े में जमीन में लगाकर दिखाया गया है कि जो तीनों देवों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) में से किसी की भी पूजा करता है, वह शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहा है जो गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में अनुचित तथा व्यर्थ बताया है। जिसने सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की पूजा नहीं की, उसको इष्ट रुप में नहीं पूजा, जिस कारण से उस साधक की साधना व्यर्थ है। शाखाओं को सींचने से पौधा नष्ट हो जाता है। अन्य देवताओं की पूजा करना गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20-23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 23-24 में मना किया हुआ है।

''देखें यह चित्र'' इसी पत्रिका के पष्ठ 21 पर सीधा लगाया गया पौधा जो शास्त्रविधि अनुसार साधना है, यही मोक्षदायक है। यही प्रमाण गीता ग्रन्थ में है।

इसलिए हे धर्मदास! श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी को नहीं छोड़ना है। इनकी शास्त्रविरूद्ध पूजा इष्ट रुप में करते हो, वह छोड़नी है। तभी भक्त का पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

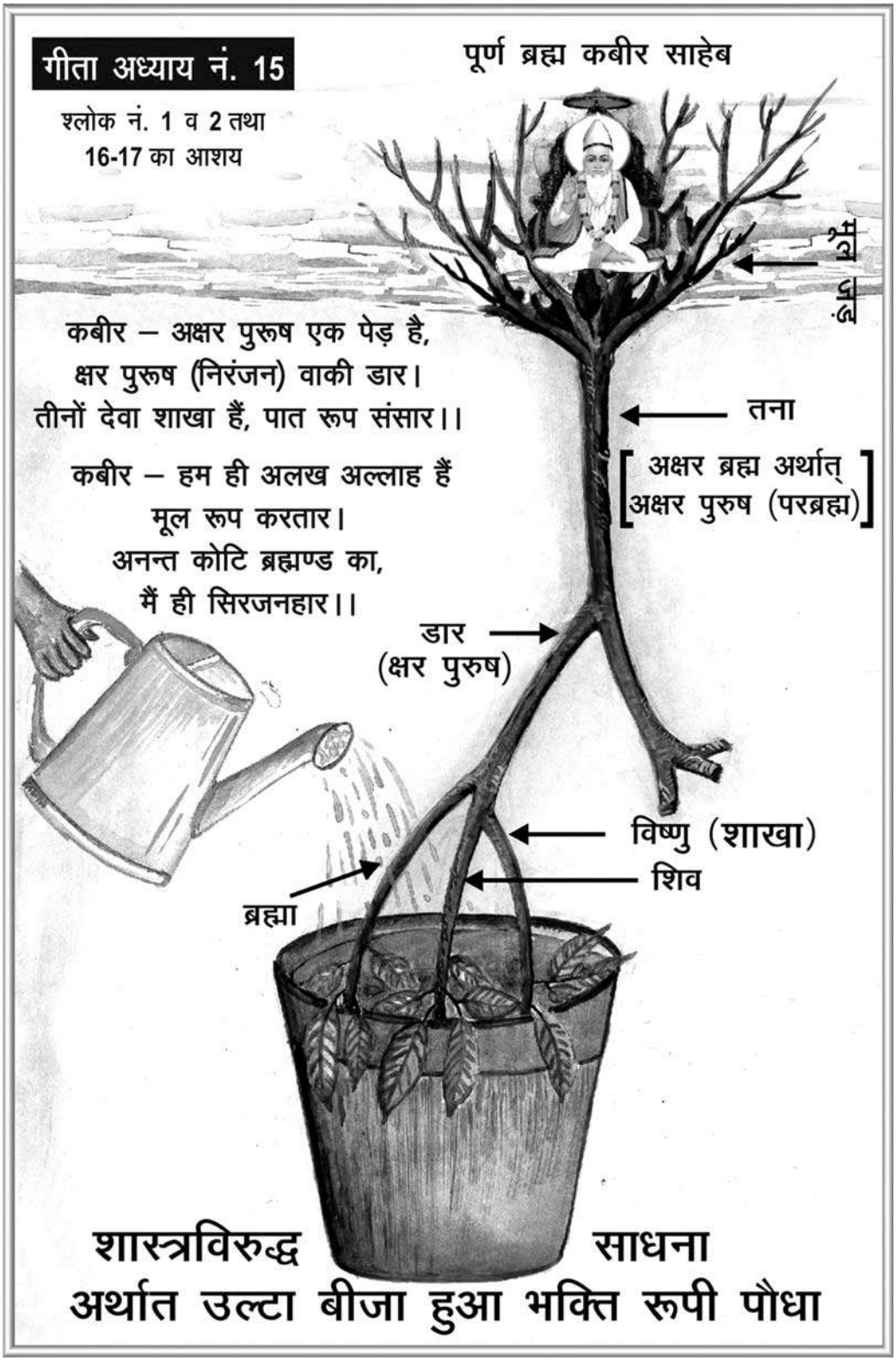
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 व 2 तथा
16-17 का आशय
पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब
मूल जड़
कबीर – अक्षर पुरूष एक पेड़ है,
क्षर पुरूष (निरंजन) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
तना
[अक्षर ब्रह्म अर्थात्
अक्षर पुरुष (परब्रह्म)]
कबीर – हम ही अलख अल्लाह हैं
मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का,
मैं ही सिरजनहार।।
डार
(क्षर पुरुष)
विष्णु (शाखा)
शिव
ब्रह्मा
शास्त्रविरुद्ध साधना
अर्थात उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा

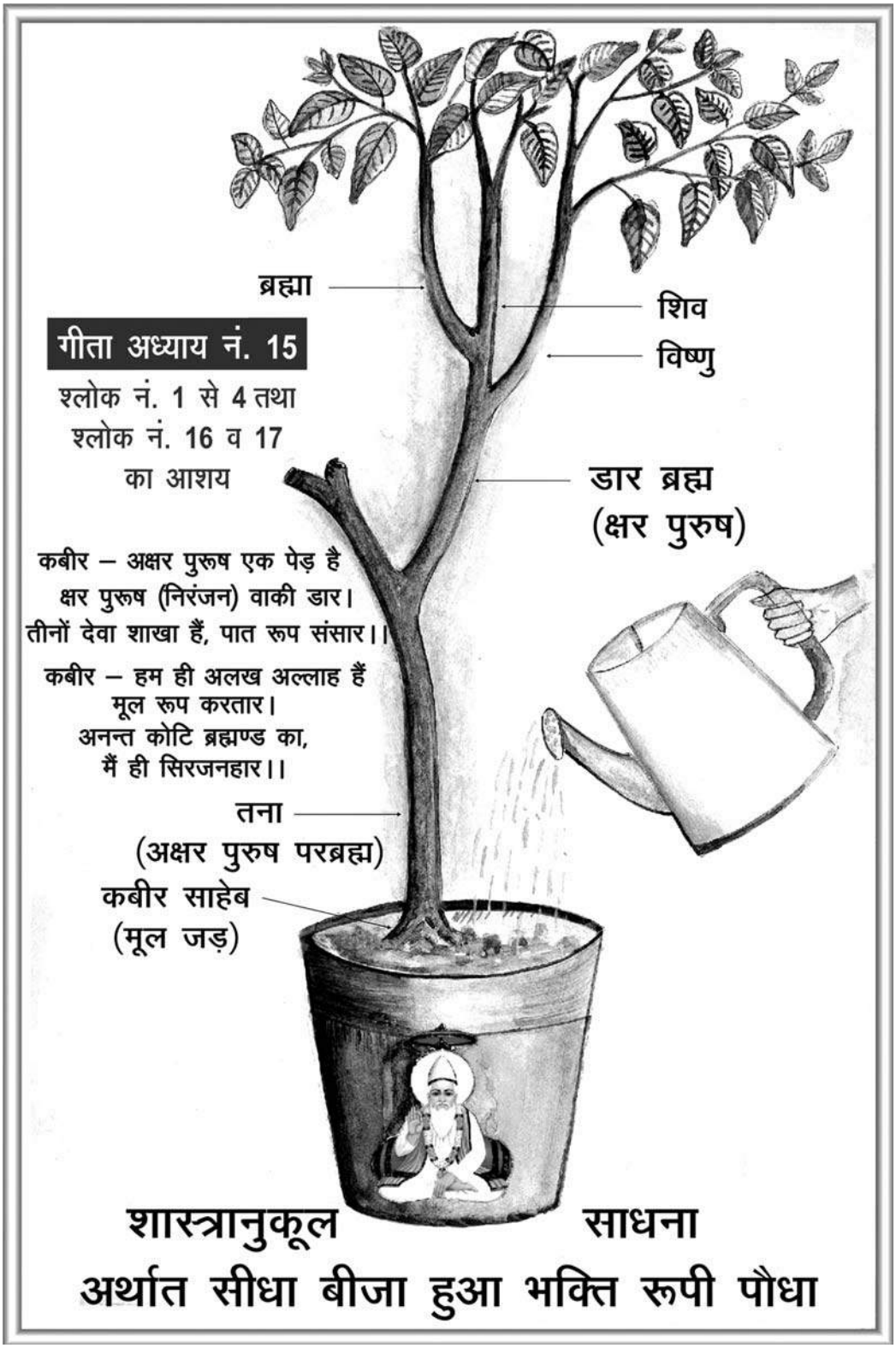
ब्रह्मा
शिव
विष्णु
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
कबीर – अक्षर पुरूष एक पेड़ है
क्षर पुरूष (निरंजन) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
कबीर – हम ही अलख अल्लाह हैं
मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का,
मैं ही सिरजनहार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
कबीर साहेब
(मूल जड़)
शास्त्रानुकूल साधना
अर्थात सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा

प्रश्न 46 :- (धर्मदास जी का): हे जिन्दा! आप जी ने तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिवजी) की भक्ति करने वालों की दशा तो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 तथा अध्याय 9 श्लोक 23-24 में प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की भक्ति करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मुझ (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म) को भी नहीं भजते। अन्य देवताओं की भक्ति पूजा करने वालों का सुख समय (स्वर्ग समय) क्षणिक होता है। स्वर्ग की प्राप्ति करके शीघ्र ही पथ्वी पर जन्म धारण करते हैं। हे महात्मा जी! कपया कोई संसार में हुए बर्ताव से ऐसा प्रकरण सुनाइए जिससे आप जी की बताई बातों की सत्यता का प्रमाण मिले। तीनों देवताओं के पुजारी ऐसा बर्ताव करते हैं।

''हरण्यकशिपु की कथा''

उत्तर :- (जिन्दा जगदीश कबीर जी का) :-

1. रजगुण ब्रह्मा के उपासकों का चरित्र : एक हरण्यकशिपु ब्राह्मण राजा था। किसी कारण उसको भगवान विष्णु (सतगुण) से ईर्ष्या हो गई। उस राजा ने रजगुण ब्रह्मा जी देवता को भक्ति करके प्रसन्न किया। ब्रह्मा जी ने कहा कि पुजारी! माँगो क्या माँगना चाहते हो? हरण्यकशिपु ने माँगा कि सुबह मरूँ न शाम मरूँ, बाहर मरूँ न भीतर मरूँ, दिन मरूँ न रात मरूँ, बारह मास में न मरूँ, न आकाश में मरूँ, न धरती पर मरुँ, न मानव से, न पशु-पक्षी से मरूँ। ब्रह्माजी ने कहा तथास्तु। इसके पश्चात् हरण्यकशिपु ने अपने आपको अमर मान लिया और अपना नाम जाप करने को कहने लगा। जो विष्णु का नाम जपता, उसको मार देता। उसका पुत्र प्रहलाद विष्णु जी की भक्ति करता था। उसको कितना सताया था। हे धर्मदास! कथा से तो आप परिचित हैं। भावार्थ है कि रजगुण ब्रह्मा का भक्त हरण्यकशिपु राक्षस कहलाया, कुत्ते वाली मौत मारा गया।

''रावण तथा भस्मासुर की कथा''

2. तमगुण शिवजी के उपासकों का चरित्र : लंका के राजा रावण ने तमगुण शिव की भक्ति की थी। उसने अपनी शक्ति से 33 करोड़ देवताओं को कैद कर रखा था। फिर देवी सीता का अपहरण कर लिया। उसका क्या हाल हुआ, आप सब जानते हैं। तमगुण शिव का उपासक रावण राक्षस कहलाया, सर्वनाश हुआ। निंदा का पात्र बना।

❖ अन्य उदाहरण :- आप जी को भष्मासुर की कथा का तो ज्ञान है ही। भगवान शिव (तमोगुण) की भक्ति भष्मागिरी करता था। वह बारह वर्षों तक शिव जी के द्वार के सामने ऊपर को पैर नीचे को सिर (शीर्षासन) करके भक्ति तपस्या करता रहा। एक दिन पार्वती जी ने कहा हे महादेव! आप तो समर्थ हैं। आपका भक्त क्या माँगता है? इसे प्रदान करो प्रभु। भगवान शिव ने भष्मागिरी से पूछा बोलो भक्त क्या माँगना चाहते हो। मैं तुझ पर अति प्रसन्न हूँ। भष्मागिरी ने कहा कि पहले वचनबद्ध हो जाओ, तब माँगूंगा। भगवान शिव वचनबद्ध हो गए। तब भष्मागिरी ने कहा कि आपके पास जो भष्मकण्डा(भष्मकड़ा) है, वह मुझे प्रदान करो। शिव प्रभु ने वह भष्मकण्डा भष्मागिरी को दे दिया। कड़ा हाथ में आते ही भष्मागिरी ने कहा कि होजा शिवजी होशियार! तेरे को भष्म करुँगा तथा पार्वती को पत्नी बनाउँगा। यह कहकर अभद्र ढ़ंग से हँसा तथा शिवजी को मारने के लिए उनकी ओर दौड़ा। भगवान शिव उस दुष्ट का उद्देश्य जानकर भाग निकले। पीछे-पीछे पुजारी आगे-आगे इष्टदेव शिवजी (तमगुण) भागे जा रहे थे।

विचार करें धर्मदास! यदि आपके देव शिव जी अविनाशी होते तो मत्यु के भय से नहीं डरते। आप इनको अविनाशी कहा करते थे। आप इन्हें अन्तर्यामी भी कहते थे। यदि भगवान शिव अन्तर्यामी होते तो पहले ही भष्मागिरी के मन के गन्दे विचार जान लेते। इससे सिद्ध हुआ कि ये तो अन्तर्यामी भी नहीं हैं।

जिस समय भगवान शिव जी आगे-आगे और भष्मागिरी पीछे-पीछे भागे जा रहे थे, उस समय भगवान शिव ने अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर को पुकारा। उसी समय ''परम अक्षर ब्रह्म'' जी पार्वती का रुप बनाकर भष्मागिरी दुष्ट के सामने खड़े हो गए तथा कहा हे भष्मागिरी! आ मेरे पास बैठ। भष्मागिरी को पता था कि अब शिवजी निकट स्थान पर नहीं रुकेंगे। भष्मागिरी तो पार्वती के लिए ही तो सर्व उपद्रव कर रहा था। हे धर्मदास! आपको सर्व कथा का पता है। पार्वती रुप में परमात्मा ने भष्मागिरी को गण्डहथ नाच नचाकर भस्म किया। तमोगुण शिव का पुजारी भष्मागिरी अपने गन्दे कर्म से भष्मासुर अर्थात् भस्मा राक्षस कहलाया।

इसलिए इन तीनों देवों के पुजारियों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

''हरिद्वार में साधुओं का कत्लेआम''

3. अब सतगुण श्री विष्णु जी के पुजारियों की कथा सुनाता हूँ।

❖ एक समय हरिद्वार में हर की पोड़ियों पर कुंभ का मेला लगा। उस अवसर पर तीनों गुणों के उपासक अपने-अपने समुदाय में एकत्रित हो जाते है। गिरी, पुरी, नागा-नाथ ये भगवान तमोगुण शिव के उपासक होते हैं तथा वैष्णव सतगुण भगवान विष्णु जी के उपासक होते हैं। हर की पोड़ियों पर प्रथम स्नान करने पर दो समुदायों ''नागा तथा वैष्णवों'' का झगड़ा हो गया। लगभग 25 हजार त्रिगुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) के पुजारी लड़कर मर गये, कत्लेआम कर दिया। तलवारों, छुरों, कटारी से एक-दूसरे की जान ले ली। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

तीर तुपक तलवार कटारी, जमधड़ जोर बधावैं हैं।
हर पैड़ी हर हेत नहीं जाना, वहाँ जा तेग चलावैं हैं।।
काटैं शीश नहीं दिल करुणा, जग में साध कहावैं हैं।
जो जन इनके दर्शन कूं जावैं, उनको भी नरक पठावैं हैं।।

हे धर्मदास! उपरोक्त सत्य घटनाओं से सिद्ध हुआ कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी की पूजा करने वालों को गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

❖ परमेश्वर जिन्दा जी के मुख कमल से उपरोक्त कथा सुनकर धर्मदास जी का सिर फटने को हो गया। चक्कर आने लगे। हिम्मत करके धर्मदास बोला हे प्रभु! आपने तो मुझ ज्ञान के अँधे को आँखें दे दी दाता। उपरोक्त सर्व कथायें हम सुना तथा पढ़ा करते थे परन्तु कभी विचार नहीं आया कि हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं। आपका सौ-सौ बार धन्यवाद। आप जी ने मुझ पापी को नरक से निकाल दिया प्रभु!

प्रश्न 47 :- (धर्मदास जी का) : हे जिन्दा महात्मा! आपने बताया और गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में मैंने भी आँखों देखा जिसमें गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने अपनी साधना से होने वाली गति को अनुत्तम

अर्थात् घटिया बताया है। उसको भी इसी तरह स्पष्ट करने की कपया करें। कोई कथा प्रसंग सुनाएं।

उत्तर :- (जिन्दा बाबा वेशधारी कबीर परमेश्वर का) :

❖ गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने कहा है कि हे अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता मैं जानता हूं। श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान प्राप्त करके परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए, जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर फिर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रुपी वक्ष की प्रवत्ति विस्तार को प्राप्त हुई हो अर्थात् जिस परमेश्वर ने सर्व संसार की उत्पत्ति की है। उसी परमेश्वर की भक्ति कर। फिर गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने कहा कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कपा से ही तू परमशांति तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा। हे धर्मदास! जब तक जन्म-मरण रहेगा, तब तक परमशान्ति नहीं हो सकती और न ही सनातन परम धाम प्राप्त हो सकता। वास्तव में परमगति उसको कहते हैं जिसमें जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाए जो ब्रह्म साधना से कभी नहीं हो सकती। इसलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि जो ज्ञानी आत्मा हैं, मेरे विचार में सब नेक हैं। परन्तु वे सब मेरी अनुत्तम (घटिया) गति में ही लीन हैं क्योंकि वे मेरी (ब्रह्म की) भक्ति कर रहे हैं। ब्रह्म की साधना का ''ऊँ'' मन्त्र है। इससे ब्रह्म लोक प्राप्त होता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट है कि ब्रह्मलोक में गए हुए साधक भी पुनः लौटकर संसार में आते हैं। इसलिए उनको परमशान्ति नहीं हो सकती, सनातन परम धाम प्राप्त नहीं हो सकता। वेदों में वर्णित साधना से परमात्मा प्राप्ति नहीं होती। कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जिनके द्वारा ऋषिजन चमत्कार करके किसी को हानि करके प्रसिद्ध हो जाते हैं। अंत में पाप के भागी होकर चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाते रहते हैं। इसलिए ब्रह्म साधना से होने वाली गति अर्थात् उपलब्धि अनुत्तम (घटिया) कही है।

''ऋषि चुणक द्वारा मानधाता के विनाश की कथा''

❖ कथा प्रसंग : गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने गीता अध्याय 7 श्लोक 16-17 में बताया है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के भक्त करते हैं - 1. आर्त (संकट निवारण के लिए) 2. अर्थार्थी (धन लाभ के लिए), 3. जिज्ञासु (जो ज्ञान प्राप्त करके वक्ता बन जाते हैं) और 4. ज्ञानी (केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति करने वाले)। इनमें से तीन को छोड़कर चौथे ज्ञानी को अपना पक्का भक्त गीता ज्ञान दाता ने बताया है।

❖ ज्ञानी की विशेषता :- ज्ञानी वह होता है जिसने जान लिया है कि मनुष्य जीवन केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए ही प्राप्त होता है। उसको यह भी ज्ञान होता है कि पूर्ण मोक्ष के लिए केवल एक परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी) की भक्ति से पूर्ण मोक्ष नहीं होता। उन ज्ञानी आत्माओं को गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में वर्णित तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण उन्होंने वेदों से स्वयं निष्कर्ष निकाल लिया कि ''ब्रह्म'' समर्थ परमात्मा है, ओम् (ऊँ) इसकी भक्ति का मन्त्र है। इस साधना से ब्रह्मलोक प्राप्त हो जाता है। यही मोक्ष है।

ज्ञानी आत्माओं ने परमात्मा प्राप्ति के लिए हठयोग किया। एक स्थान पर बैठकर घोर तप किया तथा ओम् (ऊँ) नाम का जाप किया। जबकि वेदों व गीता में हठ करने, घोर तप करने वाले मूर्ख दम्भी तथा राक्षस बताए हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 4 से 9, गीता अध्याय 16 श्लोक 17 से 20 तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 1 से 6)। इनको हठयोग करने की प्रेरणा कहाँ से हुई? श्री देवीपुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप) के तीसरे स्कंद में लिखा है कि ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद को बताया कि जिस समय मेरी उत्पत्ति हुई, मैं कमल के फूल पर बैठा था। आकाशवाणी हुई कि तप करो-तप करो। मैंने एक हजार वर्ष तक तप किया।

हे धर्मदास! ब्रह्माजी को वेद तो बाद में सागर मन्थन में मिले थे। उनको पढ़ा तो यजुर्वेद अध्याय 40 के मन्त्र 15 में 'ओम्'' नाम मिला। उसका जाप तथा आकाशवाणी से सुना हठयोग (घोर तप) दोनों मिलाकर ब्रह्मा जी स्वयं करने लगे तथा अपनी सन्तानों (ऋषियों) को बताया। (चारों वेदों तथा इन्हीं का निष्कर्ष श्रीमद्भगवत गीता में हठ करके घोर तप करने वालों को राक्षस, क्रूरकर्मी, नराधम यानि नीच व्यक्ति कहा है। प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 17-20 तथा अध्याय 17 श्लोक 1-6 में।) वही साधना ज्ञानी आत्मा ऋषिजन करने लगे। उन ज्ञानी आत्माओं में से एक चुणक ऋषि का प्रसंग सुनाता हूँ जिससे आप के प्रश्न का सटीक उत्तर मिल जाएगाः- एक चुणक नाम का ऋषि था। उसने हजारों वर्षों तक घोर तप किया तथा ओम् (ऊँ) नाम का जाप किया। यह ब्रह्म की भक्ति है। ब्रह्म ने प्रतिज्ञा कर रखी है कि मैं किसी साधना यानि न वेदों में वर्णित यज्ञों से, न जप से, न तप से, किसी को भी दर्शन नहीं दूँगा। गीता अध्याय 11 श्लोक 48 में कहा है कि हे अर्जुन! तूने मेरे जिस रुप के दर्शन किए अर्थात् मेरा यह काल रुप देखा, यह मेरा स्वरुप है। इसको न तो वेदों में वर्णित विधि से देखा जा सकता, न किसी जप से, न तप से, न यज्ञ से तथा न किसी क्रिया से देखा जा सकता। गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में स्पष्ट किया है कि यह मेरा अविनाशी विधान है कि मैं कभी किसी को दर्शन नहीं देता, अपनी योग माया से छिपा रहता हूँ। ये मूर्ख लोग मुझे मनुष्य रूप अर्थात् कष्ण रूप में मान रहे हैं। जो सामने सेना खड़ी थी, उसकी ओर संकेत करके गीता ज्ञान दाता कह रहा था। कहने का भाव था कि मैं कभी किसी को दर्शन नहीं देता, अब तेरे ऊपर अनुग्रह करके यह अपना रूप दिखाया है।

भावार्थ :- वेदों में वर्णित विधि से तथा अन्य प्रचलित क्रियाओं से ब्रह्म प्राप्ति नहीं है। इसलिए उस चुणक ऋषि को परमात्मा प्राप्ति तो हुई नहीं, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। ऋषियों ने उसी को भक्ति की अन्तिम उपलब्धि मान लिया। जिसके पास अधिक सिद्धियाँ होती थी, वह अन्य ऋषियों से श्रेष्ठ माना जाने लगा। यही उपलब्धि चुणक ऋषि को प्राप्त थी।

एक मानधाता चक्रवर्ती राजा (जिसका राज्य पूरी पथ्वी पर हो, ऐसा शक्तिशाली राजा) था। उसके पास 72 अक्षौणी सेना थी। राजा ने अपने आधीन राजाओं को कहा कि जिसको मेरी पराधीनता स्वीकार नहीं, वे मेरे साथ युद्ध करें, एक घोड़े के गले में एक पत्र बाँध दिया कि जिस राजा को राजा मानधाता की आधीनता स्वीकार न हो, वो इस घोड़े को पकड़ ले और युद्ध के लिए तैयार हो जाए। पूरी पथ्वी पर किसी भी राजा ने घोड़ा नहीं पकड़ा। घोड़े के साथ कुछ सैनिक भी थे। वापिस आते समय ऋषि चुणक ने पूछा कि कहाँ गए थे सैनिको! उत्तर मिला कि पूरी पथ्वी पर घूम आए, किसी ने घोड़ा नहीं पकड़ा। किसी ने राजा का युद्ध नहीं स्वीकार किया। ऋषि ने कहा कि मैंने यह युद्ध स्वीकार लिया। सैनिक बोले हे कंगाल! तेरे पास दाने तो खाने को हैं नहीं और युद्ध करेगा महाराजा मानधाता के साथ? ऋषि चुणक

जी ने घोड़ा पकड़कर वक्ष से बाँध लिया। मानधाता राजा को पता चला तो युद्ध की तैयारी हुई। राजा ने 72 अक्षौणी सैना की चार टुकड़ियाँ बनाई। ऋषि पर हमला करने के लिए एक टुकड़ी 18 अक्षौणी (18 करोड़) सेना भेज दी । दूसरी ओर ऋषि ने अपनी सिद्धि से चार पूतलियाँ बनाई। एक पुतली छोड़ी जिसने राजा की 18 अक्षौणी सेना का नाश कर दिया। राजा ने दूसरी टुकड़ी छोड़ी। ऋषि ने दूसरी पुतली छोड़ी, उसने दूसरी टुकड़ी 18 अक्षौणी सेना का नाश कर दिया। इस प्रकार चुणक ऋषि ने मानधाता राजा की चार पुतलियों से 72 अक्षौणी सेना नष्ट कर दी। जिस कारण से महर्षि चुणक की महिमा पूरी पथ्वी पर फैल गई। इस अनर्थ के कारण सर्वश्रेष्ठ ऋषि माना गया।

हे धर्मदास! (जिन्दा रुप धारी परमात्मा बोले) ऋषि चुणक ने जो सेना मारी, ये पाप कर्म ऋषि के संचित कर्मों में जमा हो गए। ऋषि चुणक ने जो ऊँ (ओम्) एक अक्षर का जाप किया, वह उसके बदले ब्रह्मलोक में जाएगा। फिर अपना ब्रह्म लोक का सुख समय व्यतीत करके पथ्वी पर जन्मेगा। जो हठ योग तप किया, उसके कारण पथ्वी पर राजा बनेगा। फिर मत्यु के उपरान्त कुत्ते का जन्म होगा। जो 72 अक्षौणी सेना मारी थी, वह अपना बदला लेगी। कुत्ते के सिर में जख्म होगा और उसमें कीड़े बनकर 72 अक्षौणी सेना अपना बदला चुकाएगी। इसलिए हे धर्मदास! गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने अपनी साधना से होने वाली गति यानि मुक्ति को अनुत्तम (Bad) कहा है।

''शास्त्रानुकूल भक्ति साधना से हुए भक्तों को लाभ''

''परमात्मा ने दिया जीवन दान''

मैं भक्त विशम्भर दास गाँव गितौर, जिला भिण्ड, मध्य प्रदेश का निवासी हूँ। मैंने सतगुरु रामपाल जी महाराज से दो साल से नाम उपदेश ले रखा है। मेरी लड़की साधना एक महीने से बहुत ही गम्भीर स्थिति में बीमार चल रही थी। उसके पेट में गैस बनती थी। जिसके कारण से पेट बार-बार फूलता था तथा पैरों में और सिर में लगातार दर्द रहता था। कई बार तो गला भी बंद हो जाता था। एक बार लड़की का गला इतना बंद हो गया कि लगभग आठ दिन तक पानी भी नहीं पीया गया। मैंने अपनी लड़की का ईलाज डॉक्टर महेश्वर से करवाया जो कि ग्वालियर में सबसे बड़े डॉक्टर हैं। पाँच दिन तक मेरी लड़की हॉस्पिटल में दाखिल रही, परंतु उसे एक प्रतिशत भी आराम नहीं हुआ। फिर मैंने अपनी लड़की को ग्वालियर में ही दूसरे डाक्टर P.C. Jain के पास दाखिल करवाया। तीन दिन तक मेरी बेटी वहाँ दाखिल रही। उसे उल्टी-दस्त, पेट दर्द, सिर दर्द बहुत ही तेज गति से होने लगा। उसने तीन दिन तक कुछ नहीं खाया-पीया।

हमारा सारा परिवार लड़की की इस गंभीर स्थिति को देखकर रोने लगा। हमने रोते-रोते अपने परमेश्वर सतगुरु रामपाल जी महाराज को याद किया। फिर रात को लगभग बारह बजे सतगुरु रामपाल जी महाराज ने मेरी लड़की को दर्शन दिये और कहा कि बेटी आज के बाद तेरे शरीर में कोई रोग नहीं रहेगा। इतना कहते ही लड़की ने गुरुदेव के सामने दण्डवत् प्रणाम किया और उसी समय मेरी लड़की ने संध्या आरती बोलनी शुरू कर दी और लगातार पूरी आरती की। इस लीला को देखकर हॉस्पिटल का पूरा स्टॉफ इकट्ठा हो गया और परमेश्वर की इस लीला को देखने लगा कि इतनी असीम कपा की आपके गुरुदेव ने। अगले दिन सुबह 9:30 बजे डॉक्टर ने आकर लड़की का चैकअप किया और चैकअप के बाद डाक्टर हैरान हो गया कि इस लड़की को तो रात को ही मर जाना था। परन्तु

अब इसके शरीर में नाम मात्र भी बीमारी नहीं है। ये सब देखकर पूरे हस्पताल में यह एक चर्चा का विषय बन गया। आज मेरी लड़की सौ प्रतिशत ठीक है। अच्छी तरह खाना पीना खा रही है और उसके शरीर में कोई रोग नहीं है।

ये सब सतगुरु रामपाल जी महाराज की कपा से हुआ जो परमेश्वर कबीर साहेब का ही स्वरूप हैं। इस पथ्वी पर जब तक हमारी सांसे चलती रहेगीं, हम अपने सतगुरु रामपाल जी महाराज की लीला का ऐसे ही गुणगान करते रहेंगे। ।। सत साहेब ।।

भक्त विशम्भर दास
गाँव-गितौर तहसील-मेहगाँव जिला-भिण्ड (M.P.)

''उजड़ा परिवार बसा''

मैं भक्त रमेश पुत्र श्री उमेद सिंह, गाँव-पेटवाड़, तहसील-हाँसी, जिला-हिसार का रहने वाला हूँ। अब एम्पलाईज कॉलोनी, जींद में सपरिवार रहता हूँ।

नाम लेने से पहले हम भूतों की पूजा करते थे। हमारे गाँव में बाबा सरिया की मान्यता थी जिस पर हम प्रत्येक महीने की पूर्णिमा को ज्योति लगाने जाते थे। हम शुक्रवार, जन्माष्टमी, शिवरात्रि का व्रत भी करते थे। पित्तरों का पिण्डदान और श्राद्ध भी निकालते थे। फिर भी हमारा घर बिल्कुल उजड़ चुका था। जब मैं बारह वर्ष का था, तब मेरे पिता जी की मत्यु हो गई थी। घर में तीन सदस्य थे। तीनों की आपस में लड़ाई रहती थी। तीनों को भूत-प्रेत बहुत दुःखी किया करते थे और तीनों बहुत ज्यादा बीमार रहते थे। पहले डॉक्टरों को दिखाया लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। फिर सेवड़ों के पास गए। कोई कहता तुम 5000 रूपये दे दो, मैं तुम्हें बिल्कुल ठीक कर दूँगा। कोई कहता तुम 10000 रूपये दे दो।

हम बिल्कुल उजड़ चुके थे, परंतु कोई आराम नहीं हुआ। मेरे रिश्तेदार भक्त रघुबीर सिंह गाँव कौंथ कलां, वाले के बार-बार कहने से मेरी माता जी ने सन् 1996 में संत रामपाल जी महाराज से नाम ले लिया। मेरी पत्नी को पाँच वर्ष उपरांत भी कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई थी। मेरी माता जी के कहने से मेरी पत्नी ने भी संत रामपाल जी महाराज से नाम ले लिया। नाम दान लेते ही वर्ष के अन्दर मेरी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया। मेरा भगवान से विश्वास उठ चुका था। इस कारण मैंने नाम नहीं लिया तथा अपनी माता व पत्नी को भी संत जी के पास जाने से मना करता था। मेरा लड़का जो पंद्रह दिन का था, बहुत ज्यादा बीमार हो गया। डॉक्टरों ने कह दिया कि यह लड़का सुबह तक मर जायेगा, इसे ले जाओ। शाम को एक भक्त ने सतगुरु रामपाल जी महाराज के बारे में बताया कि आश्रम जीन्द में आए हैं। वे पूर्ण संत हैं और वे ही इस बच्चे को ठीक कर सकते हैं। हम डॉक्टरों और सेवड़ों के पास जा-जाकर थक चुके थे। मेरा भगवान से विश्वास उठ गया था। मैंने उस भक्त को मना कर दिया। किंतु उसने दोबारा फिर प्रार्थना की कि वे स्वयं बन्दी छोड़ भगवान ही धरती पर आए हुए हैं। यदि वे दया कर दें तो यह लड़का ठीक हो सकता है। उस भक्त के इतने विश्वास के साथ कहने पर मैंने अपनी माता जी को अनुमति दे दी। मेरी माँ ने लड़के को ले जाकर सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में रख दिया और रोते हुए प्रार्थना की कि महाराज जी! यह बच्चा मर चुका है। अब आप ही इसे ठीक कर सकते हैं। तब बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने कहा कि कबीर परमेश्वर की रजा से यह ठीक हो जाएगा। अगले दिन जब बच्चे को मरना था, वह ठीक हो गया।

हमारा उजड़ा हुआ घर बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की कपा से दोबारा बस गया। इतना चमत्कार देखकर भी पाप कर्मों की वजह से मैंने नाम नहीं लिया और पूर्व वाली पूजा तथा भूतों की पूजा ही करता रहा। हमारे घर पर बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी का पाठ संत रामपाल जी महाराज करते थे और मैं बाहर जाकर शराब पीता था।

फिर एक वर्ष बाद एक दिन हमारे घर पाठ हो रहा था। तब शाम को बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने सत्संग किया। तब मैंने सत्संग सुना और नाम भी ले लिया। फिर हमारे घर में दुःख नाम की चीज नहीं रही। मेरी माता जी ने किसी के बहकावे में आकर नाम खण्डित कर दिया। कुछ समय पश्चात सन् 2000 में मेरी माँ को अचानक पैर में जलन होने लगी। डॉक्टरों को दिखाया। उन्होंने बताया कि इसे ब्लड कैंसर है। यह दस-पंद्रह दिन में मर जायेगी। अगर पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में ले जाओ तो वहाँ डेढ़ लाख रूपये लग कर यह ज्यादा से ज्यादा एक साल तक जीवित रह सकती है। परन्तु दर्द कम नहीं होगा।

बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने बताया कि आपकी माता जी ने नाम खंडित कर दिया है। जैसे बिजली का बिल न भरने से कनेक्शन कट जाने से विद्युत से मिलने वाला लाभ बंद हो जाता है। उसे फिर सुचारु करवाना पड़ता है। मेरी माता जी ने अपनी गलती की क्षमा याचना की। महाराज जी ने दोबारा नाम दिया तथा सिर पर हाथ रखा। सिर पर हाथ रखते ही पैर की जलन व दर्द बंद हो गया। फिर लगभग दो वर्ष के बाद जाड़ निकलवाने की वजह से जाड़ में से खून निकलने लगा। डॉक्टर ने दवाई दी और टाँके भी लगाए, परंतु खून निकलना बंद नहीं हुआ। फिर डॉक्टर ने इसकी बीमारी चैक की और बताया कि इसे ब्लड कैंसर है और अब वह फूट चुका है। अब यह ठीक नहीं हो सकती। इसे घर ले जाओ। यह खून निकलने से दो दिन में मर जायेगी। फिर अगले दिन इसके पेशाब और लैटरिंग में से भी खून आना शुरु हो गया। तब मैंने सतगुरु रामपाल जी महाराज को फोन से बताया कि डॉक्टर ने कहा है कि ये दो दिन में मर जायेगी। तब सतगुरु रामपाल जी महाराज ने कहा कि बन्दी छोड़ जो करेंगे, ठीक करेंगे।

फिर अगली रात को दो बजे यमदूत उसे लेने के लिए आए। मेरी माँ ने कहा कि तेरे पिता जी (वे दस वर्ष पहले गुजर चुके थे) मुझे लेने के लिए आये हुए हैं। इतना कहते-कहते वह यमदूत मेरी माँ के अन्दर प्रवेश कर गया और कहने लगा कि मैं इसे लेकर जाऊँगा, इसका समय पूरा हो चुका है। मेरे को चाय पिलाओ। तब हमने उसके लिए चाय बनाने के लिए रखी ही थी। इतने में वह यमदूत कहने लगा कि पता नहीं तुम्हारे घर में कितनी बड़ी शक्ति है, वह मुझे मार रही है, मैं यहाँ और नहीं रूक सकता, मुझे जल्दी से चाय पिलाओ। मैं जा रहा हूँ और गर्म चाय ही पी गया। जाते हुए कहने लगा कि तुम्हारे घर में पूर्ण परमात्मा खड़े हैं। मैं इसे नहीं ले जा सकता, यह कहते हुए वह चला गया। एक मिनट के बाद ही खून बिल्कुल बंद हो गया, जीभ और दाँत जो काले हो चुके थे, बिल्कुल साफ हो गए और बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की कपा से वह पूरी तरह से पहले से भी स्वस्थ हो गई। परमात्मा कबीर साहेब जी ने मेरी माता जी की पाँच वर्ष आयु बढ़ा दी। सत्य भक्ति करके सतलोक प्रस्थान किया।

- भक्त रमेश दास
- मोबाईल नं.- **7404438000**

''परमात्मा ने यमदूतों से बचाया''

मेरा नाम भक्तमति पालो देवी है। मैंने डेरा सच्चा सौदा सिरसा वाले महाराज जी से नाम लिया हुआ था तथा मेरा पुत्र संजू शिव जी का उपासक था व कावड़ लाया करता था। लेकिन इन उपासनाओं के करने के बाद भी मैं बीमार रहती थी तथा मेरे फेफड़ों में दर्द रहता था। मैंने अस्पतालों से भी दवाई लेकर खाई। लेकिन आराम नहीं हुआ। मुझ पर कर्मों के ऐसे संकट आये कि मेरे पुत्र बिन्दर की मत्यु हो गई तथा उसके दो महीने बाद मेरे पति की मत्यु हो गई। अब मैं तथा मेरा दूसरा पुत्र संजू ही घर में रह गये थे। मेरे पुत्र संजू ने भक्त कुक्कू के समझाने पर संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लिया। मुझे भी समझाने लगा कि माँ! आप भी संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लो। वे पूर्ण परमात्मा का अवतार आए हुए हैं। लेकिन मैं बार-बार मना करती रही।

एक दिन मेरे पुत्र ने मुझे बहुत समझाया लेकिन मैंने कहा कि सभी संत एक जैसे होते हैं। मेरा पुत्र मेरे से नाराज हो गया कि मैं अब आपको कभी नाम उपदेश लेने के लिए नहीं कहूँगा। उसके बाद मैंने अपनी बिमारी की दवाई ली तथा सो गई। सोते समय मेरी तरफ चार राक्षस आए जिनकी शक्ल बहुत भयानक थी। उनके बहुत बड़े-बड़े दाँत और नाखून थे। वे मेरे हाथों व पैरों को पकड़कर दोनों तरफ से खींचने लगे। मैं चिल्लाने लगी जबकि मेरा बेटा व बहू छत पर ही सोए हुए थे। मेरे बहुत चिल्लाने के बाद भी वे मेरी आवाज को नहीं सुन पाए।

उसके बाद सतगुरु रामपाल जी महाराज के रूप में परमात्मा आए तथा कहने लगे कि तुम इसे क्यों परेशान कर रहे हो? उन राक्षसों ने कहा कि हम इसे लेने आए हैं। हमें यमराज ने भेजा है। गुरु जी ने कहा कि तुम इसे नहीं ले जा सकते। यह तो पुण्यात्मा है, इसे तो भक्ति करनी है। जब उन्होंने मुझे नहीं छोड़ा तो गुरु जी मेरे सिर की तरफ आए और मेरे सिर पर हाथ रखा तथा कहा कि बेटी ''सत साहेब'' बोलो। फिर मेरे ''सत साहेब'' बालने के बाद वे चारों राक्षस मुझे छोड़कर चले गये। मुझे होश आया तो गुरु जी भी अन्तर्ध्यान हो गये।

मैंने अपने बेटे संजू को बताया कि तुमने तो उठकर मुझे देखा नहीं, आज में नरक में पड़ी होती। उस दिन मेरा बेटा बोला कि माँ मुझे सत्संग में जाना है। आप भी साथ चलो व नाम उपदेश ले लो। उसके बाद मैंने सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लिया व सत्संग सुना। उसमें गुरु जी ने विधवा माँ व उसके चोर बेटे की कहानी सुनाई जिसने महल में चोरी करने के लिए जाना था। मैंने मन लगाकर सत्संग सुना। मेरे आंसू बहने लगे। उसके बाद से मुझे कोई बीमारी परमात्मा की दया से नहीं रही। फेफड़ों का दर्द भी खत्म हो गया।

अब सतगुरु की कपा से मेरा परिवार पूर्ण रूप से ठीक है तथा पुत्र, पुत्रवधु व पोती के साथ सतगुरु जी महाराज की दया से पूर्ण सुखी हूँ। एक बार गलती से मेरा नाम खण्डित हो गया। उसके बाद ही मुझ पर संकट आने शुरू हो गये। मुझे बीस-पच्चीस दिन से लगातार बुखार आ रहा था। डॉक्टरों ने टाइफाइड बताया। मेरे बच्चों को सत्संग में जाना था। लेकिन मुझे डॉक्टर ने अस्पताल में दाखिल होने के लिए बोल दिया। मैंने कहा कि आप तीन दिन की दवाई दे दो। मेरे बच्चे सत्संग में जाने वाले हैं। मैंने आश्रम में फोन किया। उस समय मुझे बहुत तेज बुखार था। आश्रम में भक्तों ने गुरु जी से विनती की कि महाराज जी! पालो भक्तमति का बुखार नहीं उतर रहा। गुरु जी ने कहा कि सवा किलो

घी की ज्योति बोल दो, ठीक हो जायेगी।

अपने घर पर मैं उस समय रजाई में बैठी हुई थी। मैंने उसी समय गुरु जी के आगे प्रणाम किया तथा पाँच मिनट के अंदर ही मेरा बुखार ठीक हो गया। उस दिन के बाद मुझे आज तक बुखार नहीं आया। ।। बोलो सतगुरु देव की जय।।

- भक्तमति पालो देवी

''शास्त्रविरूद्ध साधना से छुटकारा''

मैं भक्त हेमचंद दास सोलन (हिमाचल प्रदेश) का रहने वाला हूँ। पहले मैं अपने गाँव में महाकाली मंदिर में पुजारी रहा। 25 वर्ष से वहाँ पुजारी का काम करता था। भजन-कीर्तन और जो भी पूजाऐं मंदिर में होती, सभी किया करता था। पितर पूजा, श्राद्ध निकालना, शिव जी को जल चढ़ाना आदि क्रियाऐं करता था। लेकिन फिर भी हम दुःखी रहते थे। मेरी पत्नी को पैरालाईसिस थी। घर की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी।

सन् 2005-2006 में संत रामपाल जी महाराज के कुछ लेख अखबारों में आते थे। मैं उन्हें समझ नहीं पाया, परंतु मैं इस तरह के धार्मिक कागजों को संभालकर रख लेता था। कुछ समय पश्चात् जैसे ही रद्दी से वो कागज मिले, मैं उसे पढ़ने बैठ गया और पढ़ते-पढ़ते मेरे दिल में ठेस-सी लगी कि ये ज्ञान कहाँ छिपा हुआ था? फिर मैंने उसमें आश्रम के फोन नं. देखे और पुस्तक मंगवाई। उसमें जब मैंने ज्ञान पढ़ा तो मैं हैरान रह गया, पैरों तले की जमीन खिसक गई क्योंकि मंदिर में पुजारी होने के बावजूद मैंने ऐसा नया ज्ञान कभी भी नहीं सुना था।

मैं पहले मानता रहा कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव जी से ऊपर कोई है ही नहीं। परमात्मा निराकार है। संत रामपाल जी महाराज की पुस्तकों से ज्ञान हुआ कि परमात्मा साकार है, कबीर जी पूर्ण परमात्मा हैं। परमात्मा ने अंदर एक ऐसी प्रेरणा जगाई कि संत रामपाल जी के पास ही वह अमर मंत्र है जिससे हमारा कल्याण होना है। इसी से हमारा जन्म-मरण का भयंकर रोग कटेगा। उनके ज्ञान से प्रभावित होकर मैंने संत रामपाल जी महाराज से दीक्षा ली। मैंने सभी तरह की शास्त्रविरूद्ध पूजाऐं बंद कर दी। पितर पूजा, श्राद्ध निकालना आदि सब त्याग दिया।

गुरू जी का उपदेश लेने के बाद मुझे सबसे बड़ा तो आध्यात्मिक लाभ हुआ। जन्म-मरण से मुक्ति की सच्ची राह मिली। मेरी भक्तमति को पैरालाइसिस की परेशानी थी। हर जगह बड़े-बड़े डॉक्टरों व नीम-हकीमों के चक्कर लगा चुके थे, परंतु परमात्मा के आशीर्वाद मात्र से मेरी भक्तमति ठीक हो गई। परमात्मा की दया से हमारी आर्थिक स्थिति भी ठीक हो गई।

फिर मैंने ये ज्ञान प्रचार करना शुरू कर दिया। मुझे लगा कि ये ज्ञान तो जन-जन तक पहुँचना चाहिए। लेकिन मेरी बातों पर किसी ने गौर नहीं किया। लोगों ने विरोध किया, कहा कि तुम ये कौन-सा अलग ज्ञान ले आए। ऐसी बातें ना किया करो। परंतु मुझे इस ज्ञान से परमात्मा की दया से कोई डगमग नहीं कर पाया। ऐसा सत्यज्ञान व सत्य भक्ति मार्ग पथ्वी पर और कहीं नहीं है।

मेरी सर्व से प्रार्थना है कि आप भी प्रभु के चरणों में आओ। संत रूप में आए परमेश्वर के संदेश वाहक संत रामपाल को पहचानों। मुफ्त नाम उपदेश प्राप्त करके कप्या अपना कल्याण करवाऐं।

- भक्त हेमचंद दास

''लुटे-पिटों को सहारा''

मैं भक्त बलवान सैनी पुत्र श्री कष्ण सैनी न्यू माडल टॉउन, हिसार का रहने वाला हूँ। हम पाँच भाई-बहन हैं। हमारे पूरे परिवार ने 18 वर्ष से सिरसा डेरे से उपदेश ले रखा था। हमारे घर में भूत-प्रेत की बहुत ज्यादा समस्या थी। मेरी बहन को हमें रस्सी से बाँधकर रखना पड़ता था। प्रेत बाधा के कारण वह छत से भी कूद जाती थी। मेरे पिता जी के फेफड़े भी खराब हो चुके थे। जिससे वो बिस्तर पर ही रहने लगे। मेरी माता के घुटनों में बहुत दर्द रहता था।

मेरे पिता जी हलवाई का काम करते थे। भूत-प्रेत और पिता जी की बीमारी के कारण हमारा काम बिल्कुल ठप्प हो चुका था। पहले हमारे हाँसी में तीन मकान व एक दुकान थी। घर में नौकर काम करते थे। लेकिन कर्मों की मार से हमें सब बेचना पड़ा। घर में खाने के लाले पड़ गए थे।

हम देवी-देवताओं को भी मानते थे। हम 2003 से हर महीने मेंदहीपुर जाते थे। हमारा पूरा परिवार होली-दिवाली भी मेंहदीपुर में ही मनाता था। हम डॉक्टरों के पास जाकर भी थक चुके थे। हम माता चौकी, सेवड़ों आदि जंत्र-मंत्र करने वालों के पास भी जाते थे। हम नरड़ पीर (राजस्थान) की मंढ़ी पर एक साल रहकर आए थे। हम पाँच साल तक हर महीने सजाड़ा धाम, जोधपुर जहाँ शंकर भगवान की पूजा होती थी, वहाँ पर फेरी लगाने जाते रहे, परंतु कोई लाभ हमें नहीं मिला। मेरी माँ और मैं व्रत भी रखते थे। मैं बाला जी धाम, सालासर नंगे पाँव भी दो-तीन बार गया। माता गुड़गावां वाली हमारी कुल की देवी थी। मैंने वहाँ पर हाथ पर ज्योति रखकर पंद्रह मिनट आरती भी की थी। हाथ बिल्कुल गल चुका था। परंतु हमें कोई राहत किसी भी साधना से नहीं मिली। अंत में हम हार मान चुके थे। हम दुःखी होकर घर पर ही रहने लगे। हमने सभी पूजाऐं त्याग दी।

फिर मुझे 24 फरवरी 2012 को सतगुरू रामपाल जी महाराज की पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' मिली। मैंने उस पुस्तक को पढ़ा और सपरिवार नाम ले लिया। मुझे नियम बताए गए कि आपको किसी देवी-देवता के धामों पर पूजा के लिए नहीं जाना है। मैं घर पर आ गया। मुझे रात को नींद नहीं आई, मैं बेचैन हो गया क्योंकि मैं खाटू श्याम, राधे कष्ण को बहुत अधिक मानता था। मैं उनको छोड़ नहीं सकता था। अगले दिन ही मैं खाटू श्याम चला गया। वहाँ पर मैं 5-6 दिन रहा। वहाँ पर मैं पैसे देकर VIP लाईन में लगकर दर्शन करने गया। जब मैं दर्शन करने लगा तो आवाज आई कि बलवान! तू अपना भगवान तो बरवाला में छोड़ आया है, यहाँ पर कुछ नहीं है। फिर मैं रोते हुए घर आ गया। फिर मैंने दोबारा संत रामपाल जी महाराज के आश्रम में जाकर नाम शुद्ध करवाया।

मेरे पिता जी के फेफड़े खराब हो चुके थे। उनको होली हस्पताल, हिसार में दाखिल करवाया। उनकी स्थिति ज्याड़ा बिगड़ गई और डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। कहा कि इसको घर ले जाओ। ये कुछ घण्टे का मेहमान है। फिर मैंने आश्रम में फोन किया। गुरू जी से प्रार्थना करवाई। गुरू जी ने कहा कि हम पूर्ण परमात्मा की भक्ति करते हैं। इस बच्चे का बाल भी बांका नहीं होगा। आप भगवान पर विश्वास रखो। मैंने दोबारा डॉक्टर से प्रार्थना की कि आप इसे दो-तीन दिन के लिए आई. सी. यू. में दाखिल कर लो। डॉक्टर ने कहा कि इससे कोई फायदा नहीं होगा। लेकिन मेरे ज्यादा कहने पर डॉक्टर ने मेरे साईन करवा लिए और फीस लेकर दाखिल आई.सी.यू. में कर लिया। मेरी बहन घर पर थी। उसको सपना आया कि सतगुरू रामपाल जी मेरे पिता जी के बैड के पास खड़े हैं। अगले दिन मेरे पिताजी

को होश आ गया और हालत सुधरने लगी। डॉक्टर भी हैरान रह गए कि ये तो भगवान ने ही किया है, हमें ऐसी कोई उम्मीद नहीं थी।

उस दिन के बाद से हम सारा परिवार सुख से रह रहे हैं। मेरे बहन की बीमारी बिल्कुल ठीक हो गई और उसकी शादी कर दी। मेरी माँ के घुटनों का दर्द भी बिल्कुल ठीक हो गया। फिर हम हिसार रहने लगे और कुल्फी की रेहड़ी लगाने लगे। परमात्मा की दया से हमारा अच्छा काम चल पड़ा। हमने हिसार में दोबारा अपना मकान बना लिया।

शादी के दो वर्ष बाद मेरी बहन पूजा को ऑपरेशन से बच्चा होना था। उसको हमने अग्रोहा मैडिकल में भर्ती करवाया। बच्चे की डिलिवरी के समय डॉक्टरों से गलती से बच्चेदानी की कोई नस कट गई। मेरी बहन की ब्लीडिंग बंद नहीं हो रही थी। मेरी बहन को मंगलम लैब से लेकर 45 बोतलें खून की चढ़ी। लेकिन वहाँ पर कोई आराम नहीं मिला। फिर हम अपनी बहन को जिंदल हस्पताल में लेकर आए। वहाँ भी बारह दिन तक कोई आराम नहीं हुआ और डॉक्टरों ने कहा कि हम कुछ नहीं कह सकते कि यह बचेगी या नहीं। फिर मैंने गुरू जी से प्रार्थना लगवाई। गुरू जी बोले कि बेटा! मैंने बेटी को जीवनदान दे दिया है। वह ठीक हो जाएगी। फिर तीसरे दिन मेरी बहन को होश आ गया और उसकी हालत सुधरने लगी। पूरे हस्पताल में चर्चा हुई कि ये काम तो भगवान ही कर सकता है। मेरी बहन आज बिल्कुल स्वस्थ है। उसको परमात्मा ने एक पुत्री दी है जो बिल्कुल ठीक है। परमात्मा की दया से आज हमारे घर में किसी वस्तु का अभाव नहीं है।

कबीर, पीछे लाग्या जाऊं था, मैं लोक वेद के साथ।
रास्ते में सतगुरू मिले, दीपक दीन्हा हाथ।।

।। सत साहेब ।।

भक्त बलवान दास
मोबाईल नं. - 9996593021

नोट :- यह तो एक नमूना (Sample) है, अध्यात्म ज्ञान के गोले की अधिक जानकारी के लिए कृपया पढ़ें पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' तथा ''गीता तेरा ज्ञान अमृत'' हमारी वेबसाईट www.jagatgururampalji.org पर।

सम्पर्क सूत्र :- 9555000801, 9555000808

प्रकाशक

कबीर जन कल्याण ट्रस्ट व
संत रामपाल जी के सर्व अनुयाई